Date of Posting 13-14 every month
Rs. 25/- per copy

DL No. DL (E)-20/5275/2017-2019
RNI No. DELHIN/2008/24416

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी सहित पशु विज्ञान की संपूर्ण पत्रिका

❑ खंड : 13 ❑ वर्ष : 13 ❑ अंक : 12 ❑ दिसम्बर, 2019 ❑ मूल्य: 25.00 ❑ दिल्ली

डेरी व्यवसाय कैसे शुरू करें

सर्दी में पशुओं का रख-रखाव

सर्दी के मौसम में पोल्ट्री का प्रबंध

बकरियों में पीपीआर रोग: लक्षण एवं रोकथाम

क्या खिलाएं कि नवजात बछड़े/बछिया स्वस्थ रहें

AYURVET™

PMKVY
प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना

ARF
AYURVET RESEARCH FOUNDATION

कौशल भारत

कृषि और पशुपालन-ग्रामीण अर्थव्यवस्था की कुंजी

हमारे प्रमुख कौशल क्षेत्र

- दुग्ध उत्पादन
- कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन
- जैविक खाद्य उत्पादन
- बायोगैस संचालन
- जैविक खेती
- औषधीय पौधों की खेती
- हाइड्रोपोनिक्स प्रौद्योगिकी
- मत्स्य पालन

प्रशिक्षण पाएं, आमदनी बढ़ाएं

कृषि एवं पशुपालन को यदि कुशलता एवं ज्ञान के साथ किया जाए, तो यह आपके उत्पादन को दुगुना कर सकता है।

तो आईए, साथ मिलकर कुशल भारत का निर्माण करें, जो हमारे ग्रामीण रोजगार को संपन्नता से भर दें।

Contact Us

प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए सम्पर्क करें:-

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन

AYURVET™

कॉरपोरेट ऑफिस: 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टॉवर, प्लॉट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010(उ.प्र.),दूरभाष: 91-120-7100201, फैक्स: 7100202

रजिस्टर्ड ऑफिस: 4 तल, सागर प्लाजा, डिस्ट्रिक सेंटर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-92

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी सहित पशु विज्ञान की संपूर्ण पत्रिका

खंड : 13 | अंक : 12 | दिसम्बर, 2019 | दिल्ली

प्रकाशक व प्रधान सम्पादक :
मोहन जे. सक्सेना

सम्पादक:
डॉ. अनूप कालरा

संपादकमंडल:
डॉ. रिपुदमन सिंह, आनन्द मेहरोत्रा एवं डॉ. दीपक भाटिया

संपादकीय सदस्य:
अमित बहल, डॉ. ए.बी. शर्मा, डॉ. भास्कर गांगुली, डॉ. दीप्ति राय, डॉ. राजकुमार यादव एवं डॉ. आशीष मुद्गल

मूल्य : 25/- रुपए प्रति अंक
वार्षिक : 275/- रुपए

सारे भुगतान मनीआर्डर/चैक/ड्राफ्ट "**आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली**" के नाम से दिए जाएं। कृपया दिल्ली से बाहर के चैक में बैंक कमीशन के 30/- रुपए अतिरिक्त जोड़ दें।

पत्रिका से संबंधित सभी विवादित मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।

पत्रिका में प्रकाशित लेख/विचार लेखकों के निजी हैं। प्रकाशक/संपादक इस हेतु उत्तरदायी नहीं हैं।

आयुर्वेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक व मुद्रक श्री मोहन जे. सक्सेना द्वारा छठा तल, सागर प्लाजा, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, दिल्ली-92 से प्रकाशित व मै. श्री राम इंटरप्राईजेज, एम-71, जैन मंदिर गली, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

संपादकीय/व्यवस्थापीय कार्यालय: आयुर्वेट लिमिटेड, 101-103, प्रथम तल, केएम ट्रेड टॉवर, प्लांट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010 (उ.प्र.). दूरभाष: 91-120-7100201, फैक्स : 91-120-7100202.

Web: www.ayurvet.com, e-mail: info@ayurvet.com

कहाँ क्या है

पशुधन

- डेरी व्यवसाय कैसे शुरू करें 5
- क्या खिलाएं कि नवजात बछड़े/बछिया स्वस्थ रहे 10
- बकरियों की महामारी अथवा पीपीआर रोग: लक्षण एवं रोकथाम 12
- एकीकृत स्वास्थ्य दृष्टिकोण मनुष्य एवं एवं पशुओं के परस्पर स्वास्थ्य का आधार 15
- दूध से उत्पन्न होने वाली विभिन्न जूनोटिक बीमारी 18
- गैर मिलावटी समाज: जिसका घी अमेरिका से लेकर सिंगापुर के मुस्तफा मॉल तक में बिकता है 22
- सर्दी में पशुओं का रख-रखाव 24
- सर्दी में मोसम में पोल्ट्री का प्रबंध 42

अन्य

- आप पूछे, विशेषज्ञ बताएं 27
- खोज खबर 28
- महत्वपूर्ण दिवस 38

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

आरंभ से ही प्रकृति मानव की प्रत्येक आवश्यकता पूरी करती रही है, पर मनुष्य लालचवश सदैव इसका दोहन करता रहा है। प्राकृतिक संसाधन, धरती, पर्यावरण सभी के साथ मानव ने छेड़छाड़ की है। फसल अवशिष्ट या पराली ही ले लीजिए, सदुपयोग न करके हम उसे जला देते हैं। इससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति समाप्त होती है एवं पर्यावरण प्रदूषित होता है।

पराली की समस्या आज राष्ट्रीय परिचर्चा का विषय बनी हुई है। सभी अपने अपने तरीके से विरोध, सुझाव और उपयोग बता रहे हैं। आयुर्वेट द्वारा भी इस दिशा में एक मुहिम छेड़ी गई है, जिसके अंतर्गत हम किसानों से संपर्क कर इसे जलाने से रोकने के लिए उन्हें समझा रहे हैं, तो वहीं इसकी उपयोगिता भी बता रहे हैं। वास्तव में मिट्टी, पशु और मानव स्वास्थ्य तीनों ही एक दूसरे से सीधे जुड़े हुए हैं। एक कड़ी टूटने पर दूसरा प्रभावित होता है। यदि मिट्टी में संपूर्ण पोषक तत्व होंगे, तो अधिक गुणवत्ता वाली फसल मिलेगी। यह मानव एवं पशु दोनों के लिए बेहतर आहार साबित होगी। पशु स्वस्थ होगा, तो मानव को उससे अधिक पौष्टिक व गुणवत्तायुक्त उत्पाद प्राप्त होंगे। हमने अपने पिछले अंक में ऐसे ही कुछ प्रमुख मुद्दों को समाहित किया था, आशा है कि आपको इससे ज्ञान मिला होगा और आपने उसपर अमल करते हुए स्वयं ही नहीं दूसरों को भी बताया होगा।

देश के प्रमुख संगठन सीआइआइ ने भी हरियाणा एवं पंजाब के सौ गांवों को गोद लेकर किसानों को सस्ते दाम या किराए पर पराली काटने की मशीन देने की कवायद शुरू कर दी है। देश में पहली बार करनाल (हरियाणा) में पराली से बायोगैस बनाने का संयंत्र लगाने पर काम शुरू हो चुका है, जोकि तीन वर्षों में पूरा होगा। देश ने अब इस समस्या के समाधान के लिए एकजुट प्रयास करने शुरू कर दिए हैं, जिसके परिणाम निश्चित रूप से भविष्य में दिखाई देगे।

अनेको उपयोगी जानकारियां लिए आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार पत्रिका का नया अंक आपके हाथ में है, तो फिर देर काहे कि पत्रिका के नए अंक में शामिल आलेखों को पढ़े और हमें लिख भेजें कि आपको यह अंक कैसा लगा।

(डॉ. अनूप कालरा)

डेरी व्यवसाय कैसे शुरू करे

-डॉ. अनूप कालरा

आज के युवाओं का ध्यान खेती की तरफ ज्यादा बढ़ रहा है, जिसकी वजह से खेती में काफी परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। कृषि के साथ-साथ आज का युवा खेती संबंधित व्यवसाय में भी ध्यान देने लगा है। इससे किसानों की आय में भी इजाफा देखने को मिल रहा है। आज हम आपको कृषि से जुड़े व्यवसायों की श्रेणी में शामिल प्रमुख उद्योग डेरी के बारे में बताने वाले हैं।

वर्तमान में भारत देश की बढ़ती जनसंख्या में डेरी प्रोडक्ट की मांग लगातार बढ़ रही है, जिस कारण डेरी व्यवसाय एक बहुत अच्छे मुनाफे का सौदा हो सकता है। वर्तमान में डेरी व्यवसाय में काफी बढ़ावा भी देखने को मिला है। आज ग्रामीण क्षेत्रों में काफी लोग हैं, जो इसे अपना चुके हैं, और अच्छी कमाई भी कर रहे हैं। डेरी व्यवसाय को करने में काफी सावधानियां भी रखनी होती हैं। इसके अलावा, इसे शुरू करने के लिए अनुभव की भी जरूरत होती हैं। इसीलिए हमारा संस्थान आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन पिछले कई वर्षों से एक विशेष कोर्स संचालित कर रहा है। कोर्स करने के बाद अनेक युवाओं ने पशुपालन एवं डेरी क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं।

डेरी व्यवसाय

डेरी व्यवसाय को शुरू करना इतना आसान भी नही है, जितना की हर आम इंसान सोचता है। इसको शुरू करने के लिए कई तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता हैं। डेरी व्यवसाय को पशुपालन से जोड़कर देखा जाता है, क्योंकि इसको शुरू करने के लिए पशुओं का होना जरूरी होता है। कभी-कभी पशुओं में रोग आ जाने से व्यवसाय में काफी ज्यादा घाटा भी आ जाता है। डेरी व्यवसाय को शुरू करने से पहले इसकी जानकारी अच्छी तरह ले लेनी चाहिए। इसके लिए यदि आप सोनीपत (हरियाणा) के निवासी हैं, तो हमारे चिडाना स्थित प्रशिक्षण केंद्र से प्रशिक्षण ले सकते हैं और यदि आप किसी दूसरे राज्य के निवासी हैं, तो अपने नजदीक के डेरी केंद्र पर जाकर इसका प्रशिक्षण लेना चाहिए। इसके सम्बन्ध में सही जानकारी जुटानी चाहिए, जो बाद में काम शुरू करने पर काम आती हैं।

डेरी व्यवसाय के प्रकार

डेरी व्यवसाय वैसे तो एक ही तरह से किया जाता हैं, लेकिन पशुओं की संख्या के आधार पर यह तीन तरह का होता है।

छोटे स्तर पर

छोटे स्तर इसको शुरू करने के लिए अधिक पैसे या जगह की जरूरत नही होती। छोटे स्तर पर इसकी शुरुआत तीन या चार दुधारू पशु घर पर रखकर कर सकते हैं, जिसको शुरू करने में काफी कम खर्च आता है। छोटे स्टार पर अगर आप चार उत्तम नस्ल की भैंस या गायों को रखकर इसका व्यवसाय शुरू करते हैं, तो आप आसानी से महीने भर में 18 से 20 हजार की कमाई कर सकते हैं।

सामान्य स्तर पर

सामान्य स्तर पर इसको शुरू करने के लिए पांच से सात लाख की जरूरत होती है। शुरू करने के लिए कम से कम 15 उत्तम नस्ल की गाय या भैसों का होना जरूरी होता है। इसको किसान भाई आसानी से खेती के साथ-साथ कर सकते है, जिससे किसान भाइयों को खेती के साथ-साथ हर माह लगभग 60 हजार का लाभ मिल सकता है।

बड़े स्तर पर

बड़े स्तर पर इसको शुरू करने के लिए कई चीजों की जरूरत होती है। बड़े स्तर पर शुरू करने के लिए अधिक जगह

के साथ-साथ अधिक लोगों की भी जरूरत होती है। बड़े स्तर पर इस व्यवसाय को शुरू करने के लिए कम से कम 30 से 50 उत्तम नस्ल की गायों या भैसों की आवश्यकता होती है। अगर किसान भाई 30 भैसों के साथ बड़े स्तर पर व्यवसाय शुरू करता है, तो वो हर महीने तक़रीबन एक लाख के आसपास कमाई कर सकते है।

डेरी व्यवसाय से लाभ हानि का आंकलन

डेरी व्यवसाय ज्यादातर लाभ का सौदा ही होता है, लेकिन कभी कभी पशुओं में किसी खतरनाक बीमारी के आ जाने की वजह से इसमें नुकसान उठाना पड़ जाता है। अगर साधारण रूप से इसमें लाभ या हानि का आंकलन किया जाएं, तो एक भैंस दिन में 10 लीटर दूध देती है। मान लेते हैं कि इसका भाव 40 रुपये प्रति लीटर मिले, तो एक दिन में चार सौ रुपये और महीने में 12 हजार की कमाई होती हैं। उसी तरह एक पशु पर अगर रोजाना लगभग 250 रुपये का खर्च आये, तो एक पशु से रोज़ करीब 150 रुपये की बचत होती है। ऐसे में छोटे स्तर पर इसका व्यवसाय करने पर रोज़ 600 रुपये के आसपास कमाई हो जाती है। और महीने भर में 18 हजार की शुद्ध कमाई किसान भाई को होती हैं। बाकी बड़े और माध्यम स्तर पर कमाई का आंकलन प्रति पशु से होने वाली कमाई के आधार पर कर सकते हैं।

डेरी फार्म शुरू करने के लिए सरकार की तरफ से सहायता

वर्तमान में सरकार की तरफ से भी डेरी व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए सहायता प्रदान की जाती है, जिसमें सरकार डेरी फार्म शुरू करने के लिए अनुसूचित जाति और जनजाति के लोगों को प्रति पशु की खरीद पर 23300 और बाकी श्रेणी के लोगों को 17750 दिए जाते हैं, जिसकी अधिकतम सीमा सिर्फ डेढ़ लाख रुपये ही है। अधिक जानकारी के लिए आप अपने निकटतम पशुचिकित्सक से संपर्क करें।

बड़े पैमाने पर शुरू करने के लिए बैंको की तरफ से सब्सिडी के आधार पर लोन दिया जाता हैं, जिसमें कुछ प्रतिशत मार्जिन भरकर लोग इसे शुरू कर सकते हैं। वर्तमान में कई बैंक हैं, जो इसके लिए सस्ती ब्याज दरों पर ऋण प्रदान करते हैं।

डेरी फार्म के लिए पशुधन कहाँ से खरीदें

डेरी व्यवसाय शुरू करने के लिए अच्छी नस्ल के दुधारू पशुओं का होना जरूरी है, क्योंकि दुधारू पशुओं के होने से उत्पादन अधिक मिलता हैं। इससे लाभ भी ज्यादा प्राप्त होता है। अधिक उत्पादन लेने के लिए गाय और भैसों की कई उत्तम नस्लें हैं, जो डेरी व्यवसाय के लिए सबसे उत्तम मानी जाती हैं। इन्हें किसान भाई स्थानीय तौर पर अपने पास के गांवों से खरीद सकता है। इसके अलावा, पशु मेलों में जाकर भी खरीद सकता है।

सरकार की तरफ से भी पशुओं की खरीद के लिए एक वेबसाइट बनाई हुई है। जहां से उत्तम नस्ल के पशु सस्ते दाम (रुपये) में मिल जाते हैं। सरकारी पोर्टल से पशुओं की खरीद के लिए ***https://epashuhaat.gov.in/*** आप इस लिंक पर जा सकते हैं। इस पोर्टल पर किसान भाई पशुओं को खरीदने के साथ-साथ बेच भी सकते हैं। पशुधन की खरीद के वक्त पशु के बारे में सम्पूर्ण जानकारी होनी जरूरी होती है। भैंस की उन्नत नस्लों की जानकारी के लिए आप हमारे चिडाना, सोनीपत (हरियाणा) स्थित प्रशिक्षण केंद्र में जाकर भी जानकारी ले सकते हैं।

डेरी फार्म के लिए पशुओं का चयन करते समय ध्यान रखने योग्य बातें

- डेरी फ़ार्म के लिए पशुओं की खरीद के दौरान अधिक दूध देने वाली नस्ल के पशुओं को ही खरीदना चाहिए।
- पशुओं को खरीदने के दौरान पशु स्वस्थ होना चाहिए।
- पशुओं को दिया जाने वाला खाना उत्तम और उचित मात्रा में देना चाहिए, जिससे पशुओं से दुग्ध उत्पादन अधिक मात्रा में मिलता है।
- पशुओं की देखभाल अच्छे से की जानी चाहिए, ताकि पशु अच्छे से विकास करें।

डेरी फार्म खोलने के लिए आवश्यक चीजें

डेरी फार्म खोलने की जानकारी के बाद नंबर आता है, डेरी फार्म को शुरू करने के लिए आवश्यक चीजों का, डेरी फार्म व्यवसाय को शुरू करने के लिए कई मूलभूत चीजों की आवश्यकता होती हैं।

जमीन का चयन

डेरी व्यवसाय को शुरू करने के लिए सबसे पहले जमीन की जरूरत होती है। जमीन का चयन करते समय ध्यान रखे कि जगह किसी बड़े बाजार के आसपास हो, ताकि उत्पादन को बेचने में अधिक दिक्कतों का सामना ना करना पड़े।

छोटे और सामान्य स्तर पर डेरी व्यवसाय किसान भाई बाजार में भी शुरू कर सकते हैं, लेकिन बड़े स्तर पर शुरू करने के लिए अधिक जमीन की जरूरत होने की वजह से बड़े फ़ार्म बाजार के बाहर ही बनाए जाते हैं। बड़े फ़ार्म के रूप में व्यवसाय शुरू करने के लिए किसान भाई या व्यवसायी के पास अगर जमीन खुद की ना हो, तो इसको शुरू करने के लिए जमीन किराए पर भी ले सकता है या जमीन खरीदकर भी शुरू कर सकता है।

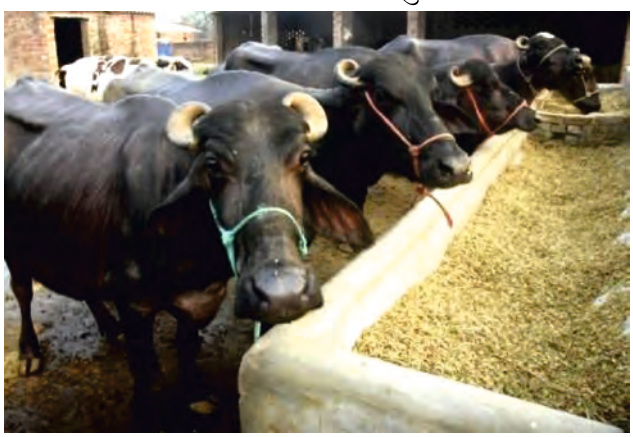

पशु व उत्पादन सुरक्षित रखने के लिए जगह निर्माण

जमीन का चयन करने के बाद पशुओं के रखने और उनकी देखरेख करने के लिए मौसम के आधार पर जगह का निर्माण कराया जाता है। सर्दियों में पशुओं को बंद जगह की जरूरत होती हैं, ताकि वो सर्दी से बच सकें। जबकि इसके विपरीत गर्मियों में पशुओं को खुले वातावरण की जरूरत होती है, ताकि पशु आसानी से खुली हवा में छाया के नीचे रह सके। इसलिए गर्मियों के मौसम में पशुओं के रहने के लिए टीन शेड से बने बाड़े का निर्माण किया जाता है। इसके अलावा, पशुओं के पीने और नहाने के लिए फार्म में पानी की उचित व्यवस्था भी की जाती है।

पशुधन के रहने की व्यवस्था के बाद डेरी व्यवसाय में काम आने वाले उपकरणों के रख-रखाव और काम करने वाले लोगों के रहने के लिए कुछ कमरों की जरूरत होती है। इसके अलावा, उत्पाद को सुरक्षित रखने के लिए शीतघर या मशीनों की जरूरत होती है, जिन्हें रहने और रखने के लिए चार से पांच कमरों का निर्माण करवाया जाता है।

मजदूरों का चयन

डेरी व्यवसाय को छोटे और सामान्य पैमाने पर चलाने के लिए अधिक मजदूर या लोगों की जरूरत नही होती। छोटे पैमाने पर होने वाले कार्य खुद किसान भाई या व्यवसायी आसानी से कर सकता हैं, जबकि सामान्य स्तर पर करने के दौरान एक या दो व्यक्ति की जरूरत होती है। जो पशुओं की देख-रेख और उनका दूध निकालने का काम करते हैं। जबकि बड़े पैमाने पर शुरू करने के लिए अधिक लोगों को रखना पड़ता है, जिनका चयन करने के दौरान व्यक्ति मेहनती और ईमानदार होना चाहिए।

वाहन सुविधा

उत्पाद को बाजार में भेजने के लिए वाहन सुविधा का होना जरूरी होता है, ताकि उत्पाद उचित समय पर लोगों के पास पहुँच जाए और खराब भी न हो पाए। वाहन सुविधा की जरूरत तब होती हैं, जब किसान भाई अपने उत्पाद को अपने तरीके से बेचता है।

पशुओं की देखभाल और उनका दूध निकालना

डेरी व्यवसाय शुरू करने के बाद सबसे पहले पशुओं की देखभाल की जाती है। इसके लिए पशुओं को उचित समय पर उचित मात्रा में खाना दिया जाता है। खाना देने के दौरान पशुओं को पौष्टिक खाना देना चाहिए। उचित और पौष्टिक खाना देने की वजह से पशुओं का विकास अच्छे से होता है। और प्राप्त होने वाला दूध भी अधिक मात्रा में मिलता है। पशुओं के खाने के रूप में अनाज, खल, बिनौले, सूखे हरे चारे की आवश्यकता होती है।

हर पशु दिन में दो बार दूध देता है, लेकिन गायों की कुछ नस्लें ऐसी हैं, जो दिन में तीन बार भी दूध देती हैं। पशुओं का दूध निकालने का काम ज्यादातर मजदूरों के द्वारा किया जाता है। यद्यपि वर्तमान में कई ऐसी मशीने बनाई जा चुकी हैं, जिनके माध्यम से दूध निकाला जाता है। दूध निकालने के बाद उसे एक जगह एकत्रित कर देना चाहिए और दूध को छानकर साफ सुथरा रखना चाहिए।

उत्पाद (दूध) को बेचना

पशुओं से मिलने वाले दूध को व्यवसायी दो तरीकों से बेच सकता हैं। पहले तरीके से वो अपने दूध को किसी कम्पनी को बेचकर लाभ कमा सकता हैं, जिसमें उसे किसी तरह के वाहन

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन के सहयोग से किसान की बढ़ रही आय

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन के सहयोग से अनेक पशुपालक आत्मनिर्भर हुए हैं। इनमें से आज हम एक सफल पशुपालक की सफलता गाथा आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं। इसका नाम है-समुन्द्र सिंह। सोनीपत जिले से करीब 25 किमी. दूर रहने वाले समुन्द्र सिंह क्षीर सागर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड से जुड़े हुए हैं। इनके पास छः गाय हैं, जिनका दूध वो पहले लोकल मार्किट में बेच देते थे, लेकिन अब वह उस दूध को बेचने की बजाय उस दूध से घी, पनीर और दूध के पैकेट समेत कई चीज़ों को बनाकर बाजार में बेच रहे हैं। वह इस व्यवसाय को ओर आगे बढ़ाना चाहते हैं।

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन ने किसान समूह को गाँव में ही दूध से घी, पनीर, दूध के पैकेट बनाने का प्रशिक्षण दिलाया। पहले समूह से 10 किसान जुड़े थे, लेकिन अब इनकी संख्या बढ़कर 50 हो गयी है। यह किसान समूह को रोज दूध की सप्लाई देते हैं तथा इसका मूल्य संवर्धन करने में सहायता भी करते हैं।

किसानों के फायदे के लिए पूरे देश में दूध से उत्पाद बनाने पर जोर दिया जा रहा है। इसी क्रम में आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन ने नाबार्ड की मदद से समूह का गठन करके संगठन के कुछ किसानों को दूध उत्पाद बनाने के लिए देहरा मिल्क प्लांट (समालखा, पानीपत) पर प्रशिक्षण दिलाया, जिसका किसानों को बड़ा लाभ हुआ।

की जरूरत भी नही होती। यदि उत्पादन कर्ता बड़े पैमाने पर इसको कर रहा है, तो वो खुद की कंपनी बनाकर दूध के प्रोडक्ट बनाकर और उसकी पैकिंग कर बाजार में बेच सकता है। इसके लिए अधिक मेहनत की जरूरत होगी, लेकिन ऐसा कर वो अपने दूध से अधिक कमाई कर सकता है।

खुद की कम्पनी बनाकर व्यापार करने लिए कुछ महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखा जाना अति आवश्यक है।

व्यवसाय का पंजीकरण

अगर उत्पादनकर्ता अपने उत्पाद को खुद बेचना चाहता है, तो इसके लिए अपनी कम्पनी के नाम का पंजीकरण कराना होगा। इसके लिए कम्पनी के नाम का पंजीकरण स्थानीय प्राधिकरण के दफ्तर में जाकर करवाना होता है। कंपनी का नाम पंजीकरण करवाने के बाद वैट पंजीकरण करवाना होता है। इसके अलावा, ट्रेड़ लाइसेंस और FSSAI का लाइसेंस भी लेना पड़ता हैं। इसके बाद आप अपने उत्पाद को अपने नाम से बेच सकते हैं। इसके पंजीकरण और लाइसेंस लेने में कुछ रुपये खर्च होते हैं।

उत्पाद या कंपनी की मार्केटिंग

व्यवसाय को पंजीकरण कराने के बाद अपने माल को बेचने के लिए उसकी मार्केटिंग करनी पड़ती है, जिसमें सबसे ज्यादा मेहनत की जरूरत होती है। इसके लिए लोगों के बीच में खुद को स्थापित करने के लिए बेहतर क्वालिटी के उत्पाद देना सबसे अच्छा होता है। साथ लोगों को अपनी कंपनी के उत्पाद की खूबियों के बारें में बताना होगा। इन सभी की जानकारी लोगों तक पहुंचाने के लिए आप अपने उत्पाद की मार्केटिंग वर्तमान में अखबार और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से भी कर सकते हैं या फिर अधिक रुपये लगाकर अपने उत्पाद का प्रमोशन किसी फेमस व्यक्ति से करा सकते हैं। इसके अलावा लोकल मार्केट में रिटेल में भी इसे बेच सकते हैं।

उत्पाद की पेकिंग और रखरखाव

दूध निकालने के बाद दूध के कई उत्पाद बनाए जाते हैं, जिन्हें उत्पादन कर्ता अपनी कंपनी के नाम से तैयार कर बाजार में बेचने के लिए भेज सकता है। उत्पाद की पैकिंग करने के बाद उस पर लेबलिंग का काम किया जाता है, जिसमें उत्पाद के बारे में सभी तरह की जानकारी दी जाती है। उत्पाद की पैकिंग करने के बाद उन्हें शीतघर में रखा जाता है, ताकि उत्पाद खराब ना हो। इसके उत्पाद को अधिक समय तक स्टोर करके नही रखा जा सकता। इसलिए उत्पाद को तुरंत बेच देना चाहिए। □□

संपादक, आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार
ईमेलः akalra@ayurvet.com

डेरी लगाने के लिए आप भी नाबार्ड से ले सकते हैं 25% सब्सिडी

अगर आप भी मिल्क डेरी खोलकर अपनी सुविधा के हिसाब से काम करना और पैसे कमाना चाहते हैं तो DEDS आप जैसे लोगों के लिए ही है।

देश में दुधारू पशुओं से रोजगार की लगातार बढ़ती संभावनाओं के बीच केंद्र सरकार ने डेरी उद्यमिता विकास योजना (DEDS) शुरू की है। अगर आप भी मिल्क डेरी खोलकर अपनी सुविधा के हिसाब से काम करना और पैसे कमाना चाहते हैं, तो DEDS आप जैसे लोगों के लिए ही है। भारत में डेरी बिजनेस की बढ़ती संभावना को देखते हुए केंद्र सरकार ने साल 2018-19 में डेरी उद्यमिता विकास योजना (DEDS) के लिए 323 करोड़ रुपये का बजट रखा है। इस रकम से सरकार डेरी खोलने वाले लोगों को 25-33 फीसदी सब्सिडी देती है। अगर आप भी डेरी बिजनेस की शुरुआत करना चाहते हैं, तो सरकार की इस योजना (DEDS) का लाभ उठा सकते हैं। अगर आप 10 दुधारू पशुओं की डेरी खोलते हैं, तो आपके प्रोजेक्ट की लागत करीब 7 लाख रुपये तक आती है। केंद्र सरकार के कृषि मंत्रालय द्वारा चलाई जा रही DEDS योजना में आपको लगभग 1.75 लाख रुपये की सब्सिडी मिलेगी।

कितने पशु रख सकते हैं?

केंद्र सरकार के कृषि मंत्रालय द्वारा यह सब्सिडी राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) के माध्यम से दी जाती है। कृषि मंत्रालय द्वारा जारी सर्कुलर के मुताबिक, अगर आप एक छोटी डेरी खोलना चाहते हैं, तो उसमें आपको क्रॉस ब्रीड गाय (औसत से अधिक दूध देने वाली) जैसे साहीवाल, रेड सिंधी, गिर, राठी या भैंस रखनी होंगी। आप इस DEDS योजना के तहत खोली गयी डेरी में 10 दुधारू पशु रख सकते हैं।

DEDS में कितनी सब्सिडी मिलेगी?

- डेरी उद्यमिता विकास योजना (DEDS) के मुताबिक आपको डेरी लगाने में आने वाले खर्च का 25 फीसदी कैपिटल सब्सिडी मिलेगी। अगर आप अनुसूचित जाति/जनजाति की कैटेगरी में आते हैं, तो आपको 33 फीसदी सब्सिडी मिल सकती है।
- यह सब्सिडी आपको अधिकतम 10 दुधारू पशुओं के लिए ही दी जाएगी।
- एक पशु के लिए केंद्र सरकार 17,750 रुपये की सब्सिडी देती है। अनुसूचित जाति/जनजाति के लोगों के लिए यह सब्सिडी 23,300 रुपये प्रति पशु हो जाती है।
- इसका मतलब यह है कि एक सामान्य जाति के व्यक्ति को 10 दुधारू पशुओं की डेरी खोलने पर 1.77 लाख रुपये की सब्सिडी मिल सकती है।

दुग्ध उत्पाद बनाने के लिए उपकरण पर सब्सिडी

डेरी उद्यमिता विकास योजना (DEDS) के तहत दुग्ध उत्पाद (मिल्क प्रोडक्ट) बनाने की यूनिट शुरू करने के लिए भी सब्सिडी दी जाती है। DEDS योजना के तहत आप दुग्ध उत्पाद की प्रोसेसिंग के लिए उपकरण खरीद सकते हैं। अगर आप इस तरह की मशीन खरीदते हैं और उसकी कीमत 13.20 लाख रुपये आती है, तो आपको इस पर 25 फीसदी (3.30 लाख रुपये) की कैपिटल सब्सिडी मिल सकती है। अगर आप एससी/एसटी कैटेगरी से आते हैं तो आपको इसके लिए 4.40 लाख रुपये की सब्सिडी मिल सकती है.

मिल्क कोल्ड स्टोरेज भी बना सकते हैं

आप डेरी उद्यमिता विकास योजना (DEDS) के तहत दूध और दूध से बने उत्पाद के संरक्षण के लिए कोल्ड स्टोरेज यूनिट शुरू कर सकते हैं। इस तरह का कोल्ड स्टोरेज बनाने में अगर आपकी लागत 33 लाख रुपये आती है, तो इसके लिए सरकार सामान्य वर्ग के आवेदक को 8.25 लाख रुपये और एससी/एसटी वर्ग के लोगों को 11 लाख रुपये तक की सब्सिडी मिल सकती है। अगर आप एससी/एसटी कैटेगरी से आते हैं, तो आपको इसके लिए 4.40 लाख रुपये की सब्सिडी मिल सकती है।

और क्या है (DEDS) योजना में शामिल?

राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) की तरफ से डेरी उद्यमिता विकास योजना (DEDS) के तहत पशु खरीदने, बछड़ा पालन, वर्मी कंपोस्ट, डेरी पार्लर, दुग्ध शीतलन व अन्य कार्यों के लिए लघु व सीमांत किसानों सहित समूहों को प्राथमिकता दी जाती है। □□

क्या खिलाएं कि नवजात बछड़े/बछिया स्वस्थ रहे

पशुधन विकास के लिए आवश्यक है कि नवजात पशु शिशु हष्ट पुष्ट हों, ताकि भविष्य का वयस्क अधिक उत्पादन दे सके। यह अपने आप में महत्वपूर्ण है कि जैसा होगा अन्न वैसा बनेगा तन। हमारे पशुपालक भाई कई बार कोताही कर जाते हैं और पशु शिशु को केवल दूध पर ही आश्रित कर देते हैं। तो ऐसा न करें और समय रहते शिशु पशु की आहार तालिका तैयार कर लें और उसी के अनुसार आहार दें।

जो किसान ब्यांत का अवसर पा रहे हैं और उनके पशु परिवार में नए मेहमान जुड़ रहे हैं। जाहिर है यह खुशी का मौका है मगर ऐसे में आपको सजगता भी दिखानी होगी। इन पशुओं के स्वास्थ्य को लेकर गंभीरता दिखाइए और अपने पशुचिकित्सक के साथ चर्चा कर उनकी आहार तालिका बनवा लीजिए। इसमें आहार का कुछ अंश तो शिशु अपनी मां से दूध-खीस के रूप में ले लेता है, बाकी आहार प्राकृतिक रूप से उपलब्ध है, जिसे आपको खिलाना है और शिशु का भविष्य बनाएं, स्वस्थ वयस्क तैयार करवाएं।

कितना पिलाएं दूध

चूंकि नवजात शिशु का पहला आहार दूध ही होता है अत: उसे दूध उपलब्ध कराते समय तीन बातों का ध्यान रखें पहली यह कि बछड़े-बछिया को उसके वजन का 10 प्रतिशत दूध पिलाना चाहिए, दूसरी जानकारी यह है कि दूध दिन में 2-3 बार देना चाहिए। इस बात को न भूलें कि 1-4 दिन तक पशु का पहला दूध (खीस) बछड़ा-बछिया को अवश्य पिलाना चाहिए।

दूध के अलावा क्या हो आहार

दूध जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही प्राकृतिक रूप से उपलब्ध आहार यानी कॉफ स्टार्टर भी महत्वपूर्ण है। जाने कि इसमें क्या कुछ होगा। छोटे बछड़ा-बछिया का आहार मोटे तौर पर खास घटक लिए होता है, इसमें मक्का-50 प्रतिशत, मूंगफली की खली-20 प्रतिशत, गेहूं का चोकर-15 प्रतिशत, फिश मिल तथा सूखा सपरेटा दूध-7 प्रतिशत, (यदि फिश मील उपलब्ध न हो तो मूंगफली की खली की मात्रा बढ़ा दें।), शीरा/गुड़-5 प्रतिशत और खनिज मिश्रण-3 प्रतिशत।

इस दिशा में प्रारंभ से ही अपनी सजगता दिखाइए। समझ लीजिए कि बछड़ा-बछिया 10 दिन का होते ही उसके सामने पानी और उनके लिए बनाया गया पशु आहार (काफ स्टार्टर) रखना शुरू कर देना चाहिए। यह आहार वह जितनी

जल्दी खाने लगे उतना ही उनका वजन बढ़ेगा और इससे सुषुप्तावस्था में रहने वाला पेट (रूमैन) सक्रियतापूर्वक कार्य करने लगता है। लेकिन वह उस समय खाता नहीं है, खाने की आदत डालने के लिए आहार रखना जरूरी होता है। दाने की मात्रा एक 'मुट्ठी से प्रारंभ करके धीरे धीरे इतनी बढ़ानी चाहिए कि 6 माह में वह 1.5 किलोग्राम पर पहुंच जाए, इसी प्रकार हरा और थोड़ा सा सूखा चारा/घास मिलाकर बछड़े को 15 दिन की आयु से ही खिलाना आरंभ करना चाहिए, ताकि घास को मुंह में लेकर चबाना शुरू कर दें, जिससे उसके पेट का विकास हो सके।

जरूरी है विटामिन और खनिज

नवजात शिशु की शारीरिक वृद्धि के लिए विटामिन ए और विटामिन डी की आहार में उपलब्धता बहुत ही आवश्यक होती है। विटामिन ए बछड़ों को खीस से उपलब्ध होता है, इसलिए नवजात बछड़ा-बछिया को खीस पिलाना अत्यंत आवश्यक है।

यही नहीं इस बात को भी कत्तई न भूलें कि दूध व आहार के साथ बछड़ा-बछिया को थोड़ी मात्रा में खनिज मिश्रण खिलाना चाहिए, इससे शरीर में बीमारियों के प्रति सहन शक्ति उत्पन्न होती है और वृद्धि एवं विकास अच्छा होता है।

बेहतर वृद्धि के लिए संतुलित आहार जरूरी

बढ़ते हुए बछड़े-बछिया को दाना अवश्य देना चाहिए। इससे उनकी शारीरिक वृद्धि होती है, जिसका प्रभाव उत्पादन काल पर पड़ता है। बछड़े-बछियों को 1 से 1.5 किलो संतुलित पशु आहार प्रतिदिन देना चाहिए। आखिर इसमें क्या कुछ होगा, जो नवजात की वृद्धि और विकास में सहायक

होगा इसमें होगा हरा चारा 10 किग्रा., हरी घास 5 किग्रा., सूखा चारा 2 किग्रा., पशु आहार 1 किग्रा., खनिज मिश्रण 30 से 40 ग्राम। जैसे जैसे वजन बढ़ता जाता है उस अनुपात में आहार में बढ़ोतरी करनी चाहिए।

पशु शिशु विकास, बातें खास

- यदि बछड़ा-बछिया को ठीक तरह से चारा पानी देकर रख-रखाव किया जाए तथा बीमारी से सुरक्षा मिलती रहे तो संकर बछिया 16 से 18 महीने की होकर गर्भावस्था के लिए तैयार हो सकती है।
- जर्सी नस्ल में 15 महीने की उम्र में लगभग बछड़ा-बछिया की छाती का घेरा 55-60 इंच होनी चाहिए और वजन 225-250 किलो के मध्य होना चाहिए।
- होलेस्टीन नस्ल में यह वजन 300 किलो के आसपास और छाती का घेरा 60 इंच के आसपास होनी चाहिए।

पशु उत्पादन में हरे चारे का महत्व

दुधारू पशुओं से ज्यादा से ज्यादा दूध उत्पादन हेतु उन्हें पूरे वर्ष मिश्रित हरा चारा खिलाना आवश्यक है। **सामान्यतः अक्टूबर से नवम्बर और मई से जून में हरे चारे की कमी होने से पशु का दूध उत्पादन कम हो जाता है। इससे किसानों को नुकसान उठाना पड़ता है। इस बात को ध्यान में रखकर आयुर्वेट ने आयुर्वेट हाइड्रोपोनिक्स प्रोग्रीन तकनीक को विकसित की है जिससे हरा चारा पूरे वर्ष पशुओं को उपलब्ध करवाया जा सकता है।**

-आयुर्वेट डेस्क से

बकरियों की महामारी अथवा पी पी आर रोग: लक्षण एवं रोकथाम

-डॉ. विवेक जोशी

पीपीआर रोग विषाणु जनित एक महत्वपूर्ण रोग है जिससे बकरियों में अत्यधिक मृत्यु होती है, इसलिए पीपीआर रोग को 'बकरियों में महामारी' या 'बकरी प्लेग' के नाम से भी जाना जाता है। एक अध्ययन के अनुसार पीपीआर रोग से भारत में बकरी पालन के क्षेत्र में सालाना साढ़े पाँच हजार करोड़ रुपये का नुकसान होता है। इसमें मृत्यु दर प्रायः 50 से 80 प्रतिशत तक होती है, जोकि अत्यधिक गंभीर स्थिति में बढ़कर 100 प्रतिशत हो सकती है। यह रोग विशेषकर कम उम्र के मेमनों और कुपोषण व परजीवियों से ग्रसित बकरियों में अति गंभीर एवं प्राणघातक सिद्ध होता है। रोग से निर्मुक्त होकर बकरियाँ जीवन पर्यन्त प्रतिरक्षित हो जाती हैं।

पीपीआर रोग विषाणु जनित एक महत्वपूर्ण रोग है जिससे बकरियों में अत्यधिक मृत्यु होती है, इसलिए पीपीआर रोग को 'बकरियों में महामारी' या 'बकरी प्लेग' के नाम से भी जाना जाता है। एक अध्ययन के अनुसार पीपीआर रोग से भारत में बकरी पालन के क्षेत्र में सालाना साढ़े पाँच हजार करोड़ रुपये का नुकसान होता है। इसमें मृत्यु दर प्रायः 50 से 80 प्रतिशत तक होती है, जोकि अत्यधिक गंभीर स्थिति में बढ़कर 100 प्रतिशत हो सकती है। यह रोग विशेषकर कम उम्र के मेमनों और कुपोषण व परजीवियों से ग्रसित बकरियों में अति गंभीर एवं प्राणघातक सिद्ध होता है। रोग से निर्मुक्त होकर बकरियाँ जीवन पर्यन्त प्रतिरक्षित हो जाती हैं।

पीपीआर रोग का कारक

'मोरबिली' नामक विषाणु का संबंध पैरामिक्सोविरिडी परिवार से है। इसी परिवार में मानव जाति में खसरा रोग पैदा करने वाला विषाणु भी पाया जाता है। पीपीआर विषाणु 60 डिग्री

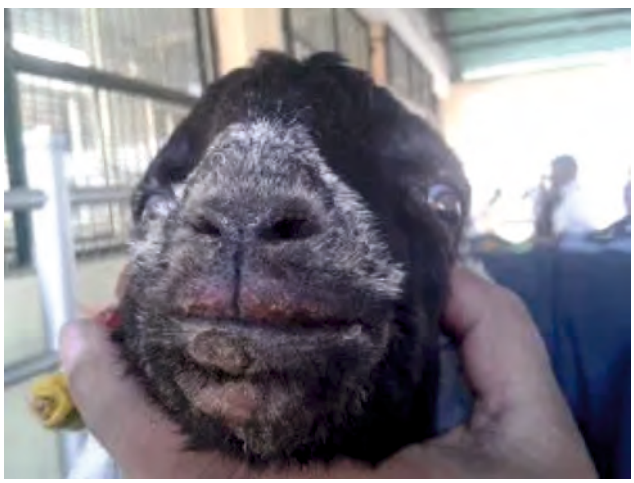

सेल्सियस पर एक घंटे रखने पर भी जीवित रहता है, परंतु अल्कोहॉल, इथर एवं साधारण डिटर्जेंट्स के प्रयोग से इस विषाणु को आसानी से नष्ट किया जा सकता है।

पीपीआर रोग का प्रसार

- मूलतः यह बकरियों और भेड़ों का रोग है।
- बकरियों में रोग अधिक गंभीर होता है।
- मेमने, जिनकी आयु 4 महीनों से अधिक और 1 वर्ष से काम हो, पीपीआर रोग के लिये अतिसंवेदनशील होते हैं।
- मनुष्यों में यह रोग होना असंभव है।
- नजदीकी स्पर्श या संपर्क और निवास से बकरियों में पीपीआर की महामारी फैलती है।
- बीमार बकरी की आँख, नाक व मुँह के स्राव तथा मल में पीपीआर विषाणु पाया जाता है।
- बीमार बकरी के खाँसने और छींकने से भी तेजी से रोग प्रसार संभव है।
- तनाव जैसे ढुलाई, गर्भावस्था, परजीविता, पूर्ववर्ती रोग

(चेचक) इत्यादि, के कारण बकरियाँ पीपीआर रोग के लिए संवेदनशील हो जाती हैं।

नैदानिक पीपीआर को निम्न परिस्थितियों के होने से जोड़कर भी देखा जाता है-

- हाल में विभिन्न आयु की बकरियों और भेड़ों का स्थानांतरण अथवा जमाव।
- बकरियों के बाड़े अथवा चारे में अकस्मात बदलाव।
- समूह में नए खरीदे गए पशुओं को सम्मिलित करना।
- मौसम में बदलाव।
- पशुपालन एवं आयात-निर्यात की नीतियों में बदलाव।

पीपीआर रोग के लक्षण

- रोग के घातक रूप में प्रारम्भ में उच्च ज्वर (40 से 42 डिग्री सेल्सियस) बहुत ही आम है।
- बीमार बकरियों में नीरसता, छींक तथा आँख व नासिका से तरल स्राव देखा जाता है। इस अवस्था के दौरान पशुपालक अक्सर सोचता है कि बकरियों को ठण्ड लग गयी है और वह उन्हें सिर्फ ठण्ड से बचाने का प्रयत्न करता है।
- दो से तीन दिन के पश्चात मुख और मुखीय श्लेष्मा झिल्ली में छाले और प्लाक उत्पन्न होने लगते हैं।
- इसी समय बकरियों के मुँह से अत्यधिक बदबू आने लगती है और पीड़ाकर मुँह व सूजे हुए ओंठों के कारण चारा ग्रहण करना असंभव हो जाता है।
- तत्पश्चात आँखों का चिपचिपा या पीपदार स्राव सूखने पर आँखों और नाक को एक परत से ढक लेता है, जिससे बकरियों को आँख खोलने और साँस लेने में तकलीफ होती है।
- ज्वर आने के तीन से चार दिन के पश्चात बकरियों में अतितीव्र श्लेष्मा युक्त अथवा खूनी दस्त होने लगते हैं।
- द्वितीयक जीवाणुयीय निमोनिया के कारण बकरियों में साँस फूलना व खाँसना आम बात है। गर्भित बकरियों में पीपीआर रोग से गर्भपात भी हो सकता है।
- संक्रमण के एक सप्ताह के भीतर ही बीमार बकरी की मृत्यु हो जाती है।

पीपीआर का उपचार एवं रोकथाम

- सर्वप्रथम पशुपालक को झुण्ड की स्वस्थ बकरियों की पहचान कर शीघ्र ही उन्हें बीमार बकरियों से अलग बाड़े में रखना महत्वपूर्ण है। इसके बाद ही रोगी बकरियों का उपचार प्रारम्भ किया जाना चाहिए।
- विषाणु जनित रोग होने के कारण पीपीआर का कोई विशिष्ट उपचार नहीं है। हालाँकि जीवाणु और परजीवियों को नियंत्रित करने वाली दवाओं के प्रयोग से मृत्यु दर कम की जा सकती है।
- फेफड़ों के द्वितीयक जीवाणुयीय संक्रमण को रोकने के लिए ऑक्सिटेट्रासायक्लीन और क्लोरटेट्रासायक्लीन औषधियां विशिष्ट रूप से अनुशंसित है।
- आँख, नाक और मुख के आस पास के जख्मों की रोगाणुहीन रुई के फाहे से दिन में दो बार सफाई की जानी चाहिए। वर्तमान में माना जाता है कि द्रव चिकित्सा और प्रतिजैविक दवाओं जैसे एनरोफ्लोक्सासिन एवं सेफ्टीऑफर के साथ पांच प्रतिशत बोरोग्लिसरीन से मुख के छालों की धुलाई से बकरियों को अत्यधिक लाभ मिलता है।

- बीमार बकरियों को पोषक, स्वच्छ, मुलायम, नम और स्वादिष्ट चारा खिलाना चाहिए। पीपीआर से महामारी फैलने पर तुरंत ही नजदीकी सरकारी पशु-चिकित्सालय में सूचना दे।
- मृत बकरियों को सम्पूर्ण रूप से जला कर नष्ट करना चाहिए। साथ ही साथ बाड़े और बर्तनों का शुद्धीकरण भी जरुरी है।

□□

ब्यांत के बाद दूध उत्पादन में कमी
कारण अनेक, समाधान एक

AYURVET™

पशुचिकित्सकों द्वारा
अपनाया गया वैज्ञानिक
रूप से जांचा परखा
भरोसेमंद हर्बल उपाय

रैस्टोबल

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाये, तनाव से बचाए और कार्यक्षमता बढ़ाए

500 मि.ली. 1 लीटर

पशुओं की बेहतर रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए शक्तिशाली समाधान

एकीकृत स्वास्थ्य दृष्टिकोण मनुष्य एवं पशुओं के परस्पर स्वास्थ्य का आधार

-विकास कुमार एवं वन्दन कुमार राय

पशु स्वास्थ्य और मानव स्वास्थ्य के लिए काम करने वाले हितधारकों और अन्य मध्यवर्ती संस्थाओं के बीच भागीदारी को मजबूत करने की आवश्यकता है। इस सक्रिय सहयोग से विकासशील देशों में मनुष्यों में एंटीबायोटिक प्रतिरोध के कारण मृत्यु की संभावित संख्या में कमी लायी जा सकती है। नैदानिक दिशा निर्देशों की कमी दोनों मनुष्य एवं पशुओं के रोगोपचार में मौजूद है, यहाँ जानवरों में एंटीबायोटिक उपयोग पर हमें परस्पर समझ की सख्त आवश्यकता है, क्योंकि यह मानवीय स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

एंटीबायोटिक उपयोग और इसके वैश्विक परिदृश्य

एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2010 से 2030 तक कृषि में एंटीबायोटिक दवाओं की खपत दुनिया भर में 67 प्रतिशत तक बढ़ने की उम्मीद है। ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका (ब्रिक्स) देशों द्वारा इस अवधि के दौरान एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग 19 प्रतिशत तक बढ़ने की संभावनाएं जताई जा

रही हैं, इन देशों में पशुपालन क्षेत्र में वर्ष 2010 से 2030 तक एंटीबायोटिक दवाओं की खपत दोगुनी हो जाएगी। भारत में निम्न स्तर और नकली दवाएं बड़ी मात्रा में आयात होती हैं, जिनका चीन और थाईलैंड जैसे अन्य देशों में उत्पादन होता है।

एकीकृत स्वास्थ्य दृष्टिकोण

चूंकि पिछले दस वर्षों में पशु, मानव, और पर्यावरण की दिशा में तालमेल स्थापित करने जैसे बहुउद्देशीय प्रयासों में काफी बढ़ोतरी हुई है, जो संधारणीय विकास के दृष्टिकोण से काफी जरुरी है। इन परस्पर जुड़े हितों ने मनुष्यों और जानवरों के स्वास्थ्य में सुधार के लिए संकलित स्वास्थ्य की पहल की है। एकीकृत स्वास्थ्य दृष्टिकोण के संबंधित विषयों के अंतरापृष्ठ में उद्देश्य को निर्धारित कर सभी हितधारकों को शामिल करना होगा, जिनका एक-जुट प्रयास और सामंजस्य जरुरी है। एंटीबायोटिक प्रतिरोध, सार्वजनिक स्वास्थ्य और पारिस्थितिकी को नियंत्रित करने के लिए पशु चिकित्सकों, चिकित्सकों और महामारीविदों की अंतर्दृष्टि का लाभ लेकर, एंटीबायोटिक प्रतिरोधों के खतरे से निपटने के लिए सुनियोजित प्रणाली सुनिश्चित की जा सकती है।

मानव और पशु स्वास्थ्य के बारे में विसंगतियां और अधूरी समझ

पशु स्वास्थ्य और मानव स्वास्थ्य के लिए काम करने वाले हितधारकों और अन्य मध्यवर्ती संस्थाओं के बीच भागीदारी को मजबूत करने की आवश्यकता है। इस सक्रिय सहयोग से विकासशील देशों में मनुष्यों में एंटीबायोटिक प्रतिरोध के कारण मृत्यु की संभावित संख्या में कमी लायी जा सकती है। नैदानिक दिशा निर्देशों की कमी दोनों मनुष्य एवं पशुओं के रोगोपचार में मौजूद है, यहाँ जानवरों में एंटीबायोटिक उपयोग पर हमें परस्पर समझ की सख्त आवश्यकता है, क्योंकि यह मानवीय स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। एंटीबायोटिक दवाओं की प्रभावकारिता को बहाल करने के प्रयासों पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए। रोग होने से पहले उसके निरोध में एंटीबायोटिक का उपयोग कम या प्रतिबंधित किया जाना चाहिए तथा जैव सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु प्रयास करना

चाहिए। विकासशील देशों में एंटीबायोटिक प्रतिरोध में लगातार बढ़ोतरी का महत्वपूर्ण कारण लोगों में जागरूकता में कमी है। यह संपादन, व्यवहार्य और व्यावसायिक रूप से लोकप्रिय विषय अभी तक नहीं बन पाया है। परन्तु देश-विदेश में इस विषय पर जागरूकता हेतु अभियान और जन-कल्याण में कार्य हो रहे हैं। पशु स्वास्थ्य और मानव स्वास्थ्य पर काम कर रहे क्षेत्र के पेशेवर एकीकृत एवं संयोजित प्रयास पहले से ही विवादास्पद रहे हैं, इसलिए इन विभाजनकारी मुद्दों पर आम सहमति की आवश्यकता है।

एंटीबायोटिक दवाओं के विकल्प

एक तरफ दवा उद्योग के विकास के कारण दवाओं का अँधा-धुंध प्रयोग हो रहा है, संक्रमणों में तेजी आ रही है, जिसके

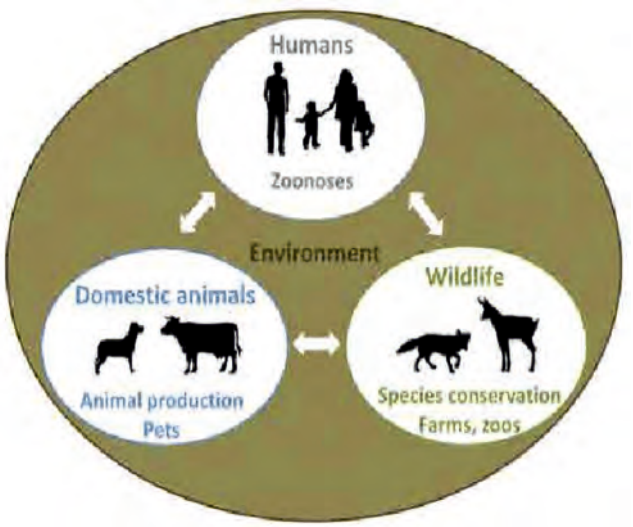

कारण उपयुक्त दवाओं का उसी स्तर से विकास होना जरुरी है। एंटीबायोटिक संरक्षण का उद्देश्य उसकी उपचारक क्षमता को बचाने हेतु इसके न्यूनतम उपयोग को बढ़ावा देना हो सकता है। भविष्य में एंटीबायोटिक दवाओं के लगातार और अँधा-धुंध प्रयोग को कम करने के लिए टीकाकरण को अप्रत्यक्ष चुनाव माना जा सकता है। हितधारकों को जानवरों और मनुष्यों, दोनों में एंटीबायोटिक दवाओं का अधिक मात्रा में प्रयोग को कम करने के लिए प्राथमिकता देना चाहिए, क्योंकि एंटीबायोटिक की कुछ श्रेणियां परस्पर मनुष्य एवं पशुओं में समान हैं।

दुनियाभर में कुछ प्रयास

अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने एंटीबायोटिक प्रतिरोध से निपटने के लिए नई राष्ट्रीय रणनीति तैयार करने पर ध्यान दिया। नतीजतन, अमेरिकी सरकार ने एक बहुपयोगी एकीकृत स्वास्थ्य दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया, जिसका उद्देश्य मानव और पशु स्वास्थ्य के साथ ही पर्यावरण क्षेत्रों के बीच समन्वय करना है। सदस्य देशों पर यूरोपीय संघ द्वारा सदस्य देशों में के एंटीबायोटिक प्रतिरोध को नियंत्रित करने के लिए बहुराष्ट्रीय प्रासंगिक मुद्दों पर बल दिया गया।

दृष्टिकोण का महत्त्व

यह दृष्टिकोण संक्रमण तथा बीमारी को जल्द ठीक करने, उसके उपचार की लागत कम करने, खाद्य सुरक्षा में सुधार लाने और पशुधन और मानव के जीवन को रोगों से बचाने में उपयोगी सिद्ध होगा। यह पर्यावरण के साथ पशुओं और जानवरों के स्वास्थ्य एवं विभिन्न प्रकार के पारस्परिक संबंधों को जोड़ता है। इसका उद्देश्य रोगों की आवृत्ति में कमी लाना है, ना कि उनका उपचार करने तक सीमित रहना। मनुष्यों में 10 में से 6

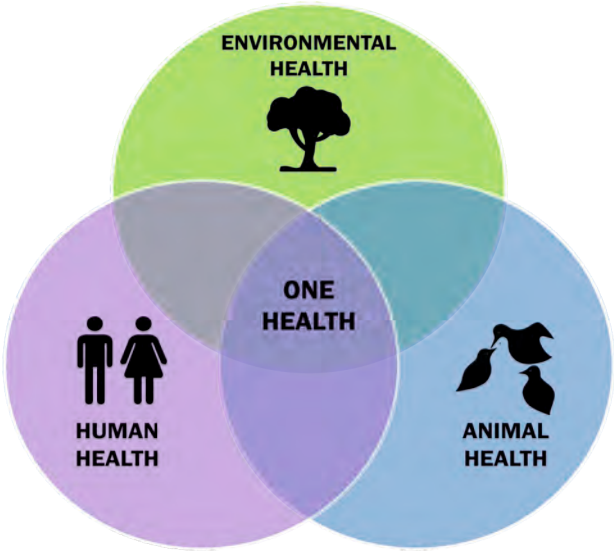

ससंक्रमक बीमारियाँ पशुओं के माध्यम से फैलती है, जैसे रैबीज, ब्रूसीलोसिस, साल्मोनेला इन्फेक्शन इत्यादि। कुछ पशु इन बीमारियों के प्रति मनुष्यों से ज्यादा संवेदनशील हैं, अतः वे इन बीमारियों के फैलने की अग्रिम सूचक और चेतावनी के रूप में काम करते हैं, जोकि एकीकृत स्वास्थ्य के महत्व को रेखांकित करता है। मनुष्य में डायबिटीज एक गंभीर बीमारी है, यह बिल्लियों में भी उन मध्य आयु-वर्ग में पाया जाता है, जो मोटे और सुस्त हैं यह बिल्लियों में भी उसी कारण से बढ़ रहा है, जो मनुष्यों में इस बीमारी के लिए उत्तरदायी हैं। अतः एकीकृत स्वास्थ्य दृष्टिकोण मनुष्य और पशुओं के परस्पर परिदृश्य का ध्यान रखता है, ताकि सभी का हित हो।

एकीकृत स्वास्थ्य दृष्टिकोण की चुनौतियां एवं उद्देश्य

यह दृष्टिकोण कई उभरते संक्रामक रोगों के पीछे आर्थिक कारणों को समझने और उनके निवारण करने में असमर्थ है। पर्यावरण, पशु विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के प्रयासों के बीच अंतर को तथा एकजुट होकर आगे बढ़ने की आवश्यकता है। विभिन्न पेशेवरों, विभिन्न प्राथमिकताओं और वित्तपोषण वाले विभिन्न संस्थानों और अन्य हितधारकों के सम्मिलित प्रयास जरूरी हैं। राष्ट्रीय स्तर पर रोग निगरानी, नियंत्रण और एंटीबायोटिक प्रतिरोध की रोकथाम करने के लिए मिशन और कल्याणकारी संस्थान की अत्यधिक आवश्यकता हैं। बहुत कम योग्य पशु चिकित्सक इस क्षेत्र के पेशेवरों में शामिल हैं, जोकि पशु स्वास्थ्य और नैतिक मूल्यों को अपनी आर्थिक उन्नति पर प्राथमिकता देते हैं। 03 नवम्बर को एकीकृत स्वास्थ्य दिवस घोषित किया गया है, ताकि लोगों को इस दृष्टिकोण के प्रति जागरूक किया जा सके।

निष्कर्ष

एकीकृत स्वास्थ्य परिदृश्य में पशु-चिकित्सकों की भूमिका अग्रणी है, क्योंकि उचित एंटीबायोटिक का उचित मात्रा का निर्धारण उनके द्वारा किया जाना चाहिए। डेरी पशुओं द्वारा दुग्ध- उत्पादन, परिवहन, प्रसंस्करण एवं भण्डारण, सुपरमार्केट में विक्रय, कसाई-खाना द्वारा मांस विक्रय, इन सभी माध्यम द्वारा एंटीबायोटिक प्रतिरोध, रासायनिक पदार्थ तथा प्रतिरोधी जीन हमारे खाद्य-श्रृंखला में आते हैं, तथा अप्रत्यक्ष रूप से हमें बीमारियों के प्रति संवेदनशील बनाते हैं। अतः इन परस्पर जुड़े कारकों को समझ कर मनुष्य-पशुओं के स्वास्थ्य को ध्यान में रख कर एंटीबायोटिक का कम-से कम प्रयोग करना चाहिए। □□

-राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

यकृफिट

लीवर टॉनिक द्रव

विषाक्त आहार हो या लंबी बीमारी
पशु के लीवर पर है बोझ भारी।
लीवर की सूजन या हो कृमियों से आहत
यकृफिट दे पशु को हर हाल में राहत।।

यकृफिट के उपयोग

- यकृत (लीवर) की क्रिया को सुचारू रखे
- लीवर से पित्त विसर्जन उत्तेजित कर लीवर की कार्यक्षमता को बढ़ाए
- लीवर की कोशिकाओं को पुनः जीवन देकर उन्हें स्वस्थ रखे
- उत्पादकता बढ़ाए

सेवनविधि

- 50 मि.ली. या दो बोलस, दिन में 2 बार 5-7 दिनों तक या पशुचिकित्सक के निर्देशानुसार

पैक

4 बोलस की एक स्ट्रिप | 500 मि.ली. | 1 लीटर

दूध से उत्पन्न होने वाली विभिन्न जूनोटिक बीमारी

-डॉ. राजेश कुमार

क्यू-फीवर जुगाली करने वाले पशुओं मे मुख्यतः गर्भपात करवाता है। इस बीमारी में संक्रमित पशुओं मे निमोनिया का होना आम बात है। इस बीमारी में भूख का न लगना तथा बुखार का आना या होना भी एक सामान्य बात है। संक्रमित पशु जोकि थनैला रोग या गर्भपात से ग्रसित हो, उन पशुओं द्वारा कच्चे दूध में इस जीवाणु की खूब सारी मात्रा मानव स्वास्थ्य को उपहार मे दे दी जाती है।

जूनोटिक बीमारियां संक्रमित पशु से स्वस्थ व्यक्ति में दूषित दूध से या तो सीधे तौर पर रोगग्रस्त या संक्रमित डेरी पशु द्वारा या अप्रत्यक्ष रूप से दूषित जल, मक्खियों, मिट्टी और दूषित दूध के उपकरणों से फैलता है।

1. गोजातीय तपेदिक

यह बीमारी माइकोबैक्टिरियम ट्यूबरकुलोसिस नामक जीवाणु द्वारा फैलती है। संक्रमण का मुख्य स्रोत कच्चा दूध है।

दूध के द्वारा दो तरह से तपेदिक हो सकता है -

- यदि पशु में थनैला रोग हो जिसमें माइकोबैक्टिरियम जीवाणु का संक्रमण हो तो उस पशु के दूध के इस्तेमाल से यह रोग होता है।
- यदि पशु में लीवर का संक्रमण, किडनी का संक्रमण और आंत का संक्रमण हो, जिसका कारण माइकोबैक्टिरियम जीवाणु हो तो वो भी रोग फैलाने का एक अच्छा कारण है।

गोजातीय तपेदिक दो प्रकार की होती है -

1. सामान्य तपेदिक, 2. मिलीयरी तपेदिक।

- जब सीने का एक्स-रे लिया गया तो फेफड़े के क्षेत्र मे बाजरे के बीज के समान एक विशिष्ट क्रम दिखाई दिया, यह विशिष्ट क्रम कई हजारों लाखों की संख्या में था। इसलिये इस बीमारी को मिलीयरी तपेदिक नाम दिया गया। यह मिलीयरी तपेदिक किसी भी अंग जैसे-यकृत, फेफड़े और तितली को प्रभावित कर सकते है। मिलीयरी तपेदिक कुल तपेदिक बीमारी का एक से तीन प्रतिशत होता है।

2. ब्रुसेलोसिस

इससे संक्रामक गर्भपात, एंडुलेट या माल्टा बुखार भी कहते है। यह बीमारी ब्रुसेला अबोर्टस तथा ब्रुसेला मेलीटेंसिस जीवाणु द्वारा फैलती है।

संक्रमण के स्रोत

दूषित भोजन, आंत, रक्त प्रवाह एवं सुपरामेमोरी और गहरी इन्गुयनल लसिका गांठे।

गर्भपात

मनुष्य में संक्रमण भोजन तथा आंत द्वारा होता है। मनुष्य यदि सीधे तौर पर संक्रमित पशु के संपर्क में भी आ जाये तो भी उसे यह बीमारी हो जाती है। संक्रमित पशु के सीधे संपर्क में जैसे-उसके श्वास से और आंखों के संक्रमण से भी मनुष्य में यह बीमारी हो सकती है।

3. क्यू-फीवर

यह बीमारी कोकजिला बरनेटाई द्वारा फैलती है। यह बीमारी चिचडियों के द्वारा फैलायी जाती है। जब इस जीवाणु का बीजाणु दूध, यूरीन, मल, योनि म्यूक्स तथा संक्रमित वीर्य के संपर्क मे आता है तो ये बीजाणु स्वस्थ व्यक्ति को संक्रमित कर देता है।

संक्रमण के स्रोत

दूषित धूल मिट्टी, दूषित दूध एवं दूषित मांस एवं ऊन।

इस जीवाणु का संक्रमण काल दो से तीन सप्ताह का है। यह बीमारी मुख्यतः गाय, भेड़ व बकरी में होती है। इन सब पशुओं मे इस जीवाणु का बीजाणु स्वतंत्र रूप से आराम करता है।

क्यू–फीवर जुगाली करने वाले पशुओं मे मुख्यतः गर्भपात करवाता है। इस बीमारी में संक्रमित पशुओं मे निमोनिया का होना आम बात है। इस बीमारी में भूख का न लगना तथा बुखार का आना या होना भी एक सामान्य बात है। संक्रमित पशु जोकि थनैला रोग या गर्भपात से ग्रसित हो, उन पशुओं द्वारा कच्चे दूध में इस जीवाणु की खूब सारी मात्रा मानव स्वास्थ्य को उपहार मे दे दी जाती है।

मनुष्य में रोग के लक्षण

बुखार, अस्वस्थता, अधिक पसीना आना, तेज सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द, जोड़ों का दर्द, भूख में कमी, श्वांस लेने में तकलीफ, सूखा बलगम, ठण्ड लगना, भ्रम की स्थिति एवं आंत की बीमारी के लक्षण जैसे कि जी मचलना, उल्टी तथा दस्त का लगना।

इस बीमारी मे बुखार 7 से 14 दिन तक रहता है। इन दिनों के बीच में ये जीवाणु निमोनिया भी कर सकता है। इस बीमारी का ईलाज टीकाकरण द्वारा ही संभव है।

4. लिस्टेरियोसिस

यह बीमारी लिस्टेरिया मोनोसायटोजीनस तथा लिस्टेरिया इवानोवी जीवाणु द्वारा होती है। इस जीवाणु के संक्रमण का मुख्य स्रोत दूषित भोजन है। यह जीवाणु मेजबान की कोशिका मे अपनी संख्या में बढोतरी करता है तथा दूषित भोजन से फैलने या होने वाली बीमारियों में ये सबसे खतरनाक बीमारी है। इस बीमारी मे 20 से 30 प्रतिशत मरीजों की मौत बिना इलाज के ही हो जाती है। लिस्टेरियोसिस बीमारी दुनिया में दूषित भोजन से होने वाली अन्य बीमारियों जैसे-सालमोनेला तथा क्लोस्ट्रीडिम बोटुलिज्म के समान ही बहुत खतरनाक है।

5. गाय चेचक

गाय चेचक एक त्वचा का रोग है, जोकि गाय चेचक वायरस द्वारा फैलता है। यह बीमारी संक्रमित गाय के अडर (गादी) द्वारा दूध दोहने वाले ग्वाले को होती है। इस बीमारी में गाय के थनों पर लाल चकते हो जाते हैं। इन लाल चकतों को स्वस्थ मनुष्य द्वारा छू लेने से ये बीमारी स्वस्थ मनुष्य में फैलती है। गाय चेचक छोटी माता बीमारी के समान ही लक्षण प्रकट करती है, परन्तु ये छोटी माता बीमारी से भी संक्रामक बीमारी है। जब तक रोगी गाय चेचक बीमारी से ठीक होता है तब तक उसमें छोटी माता जैसी बीमारी से प्रतिरक्षा उत्पन्न हो जाती है।

6. खुर और मुंहपका रोग

यह बीमारी खुरों वाले पशुओं में देखने को मिलती है। इस बीमारी में पशु को 2-3 दिन तक छालों के साथ बुखार आता है।

इस बीमारी में रोगी पशु को मुंह तथा खुरों के बीच स्थित नर्म त्वचा में छाले हो जाते हैं। यह बीमारी पशुओं मे पिकोरना वायरस द्वारा फैलती है। इस बीमारी में वायरस अपनी संख्या में बढ़ोतरी करते हैं तथा उसके बाद मुंह तथा खुरों के बीच की त्वचा में छाले उत्पन्न करते हैं। यह बीमारी संक्रमित पशु से वायु के द्वारा फैलती है। पशुपालन के लिए मुंह तथा खुरपका रोग एक बहुत खतरनाक संक्रामक बीमारी है, जोकि दूषित भोजन, कपड़े, साधन तथा देशी तथा जंगली भक्षक तथा वायु के द्वारा फैलती है। इसकी रोकथाम के लिए टीकाकरण में काफी प्रयास करके, सख्त निगरानी, बीमार पशु को अलग रख कर इस बीमारी को दूसरे स्वस्थ पशुओं में फैलने से रोक सकते है। मुंह एवं खुरपका रोग पेट मे अम्ल के प्रति संवदेनशील है। ☐☐

स्नातकोतर पशु चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान
पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर

फसल अवशेष प्रबंधन जागरूकता के बेहतरीन परिणाम

आयुर्वेट फसल अवशेष प्रबंधन के लिए पशुपालकों एवं किसानों को गोष्ठियों एवं सम्मेलनों द्वारा निरंतर जागरूक करने के लिए कार्य करता रहता है। वर्ष 2015 से लगातार नाबार्ड एवं आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन के सहयोग से सोनीपत एवं पानीपत जिले के 500 से अधिक गांवों में फसल अवशेष प्रबंधन के बारे में जागरूकता कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं।

कार्यक्रम का सफल आयोजन

श्री अशंज सिंह, आईएएस (उपायुक्त, सोनीपत) ने हरी झंडी दिखाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम में सोनीपत एवं पानीपत जिले के कृषि विभाग, कृषि विज्ञान केंद्र एवं जिला प्रशासन ने पूरा सहयोग मिया। आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन के प्रतिनिधियों ने सभी कलस्टरों में जाकर किसानों को जागरूक किया, ताकि वह खेतों में पुआल न जलायें एवं तकनीकी ज्ञान प्राप्त करके उसका सही निस्तारण करें। इसके लिए उन्हें अनेक तरीके भी सुझाए गए। कार्यक्रम के आरंभ में सोनीपत के अनेकों गाँव में किसान गोष्ठी करके फसल अवशेष प्रबंधन के बारे में समझाया गया।

किसानों ने ली शपथ को किया पूरा

आयुर्वेट रिसर्च फाउण्डेशन के प्रतिनिधियों ने किसानों ने फसल अवशेष न जलाने की शपथ दिलाई गई। मोबाइल वैन से यंत्रों को गाँव-गाँव ले जाकर फसल अवशेष प्रबंधन यंत्रों की जानकारी दी गई। किसानों के सम्मुख उन संयंत्रों

का प्रदर्शन किया गया। प्रतिनिधियों ने वैन द्वारा सोनीपत एवं पानीपत के गाँवों में जा-जाकर किसानों को जागरूक किया तथा फसल अवशेष प्रबंधन पर लिखी गई किताब का वितरण किया गया।

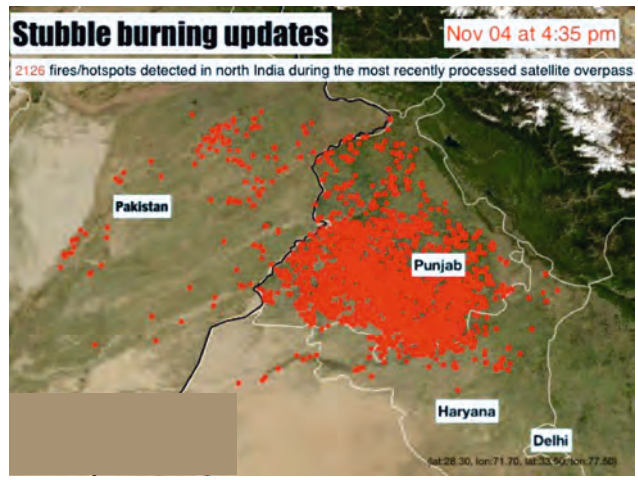

हाल ही में अनेक किसानों से हुई बातचीत से पता चलता है कि उन्होंने इस जानकारी को अत्यंत लाभकारी पाया और इस ज्ञान का फायदा उठाकर फसल अपशिष्टों का सही निस्तारण किया। इतना ही किसानों ने दूसरे किसानों को पराली न जलाकर इसका सही उपयोग कैसे करें, इसकी जानकारी दी। इसी का परिणाम है कि इस वर्ष हरियाणा में पराली जलाने के केवल 300 ही मामले सामने आए हैं, जिसकी पुष्टि मिनिस्ट्री ऑफ अर्थ साइंसेज ने भी की है।

□□

एक्सापार

AYURVET™

प्रसव पश्चात् गर्भाशय की सफाई एवं पुनः गाभिन बनाने हेतु

ब्याने के बाद की समस्याओं का अत्यंत प्रभावकारी उपाय

- गर्भाशय के संक्रमण से बचाए एवं संपूर्ण सफाई करे
- गर्भाशय के संकुचन द्वारा जेर गिराने में सहायक
- गर्भाशय को समयानुसार पुनः स्थापित करे
- रीपिट ब्रीडिंग एवं बांझपन की समस्या से बचाए
- ब्याने के बाद समयानुसार अगले गर्भधारण के लिए तैयार करे

1 लीटर बोतल

500 मि.ली. पैट बोतल

4 बोलस की एक स्ट्रिप

गैर मिलावटी समाज: जिसका घी अमेरिका से लेकर सिंगापुर के मुस्तफा मॉल तक में बिकता है

आज सबसे बड़ी चुनौती है कि कैसे डेरी व्यवसाय को फायदे का कारोबार बनाया जाए? भारत ही नहीं दुनिया के कई देशों में किसानों को दूध के सही दाम नहीं मिल पा रहे हैं। दूध की कीमतें गिर रही हैं। इस स्थिति में कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो दूध और उसके उत्पादों से मुनाफा कमा रहे हैं, डेरी को फायदा कारोबार बना रहे हैं।

भारत ही नहीं दुनिया के कई देशों में किसानों को दूध के सही दाम नहीं मिल पा रहे हैं। दूध की कीमतें गिर रही हैं, लेकिन इसी बीच कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो दूध और उसके उत्पादों से मुनाफा कमा रहे हैं, डेरी को फायदा कारोबार बना रहे हैं। हालांकि इन लोगों ने अपने कामकाज में कुछ बदलाव किए हैं और कुछ ऐसे कदम उठाए है..जिसमें बड़ी बात है शुद्धता की। शुद्धता की बदौलत ये दूध और उसके उत्पादों की विदेशों में भी मांग है।

अगर दूध की गुणवत्ता अच्छी है, तो सही कीमत मिलना भी तय है, यह साबित किया है हरियाणा के मोहन सिंह अहलूवालिया ने। आज उनके साथ पांच लाख से ज्यादा पशुपालकों को लाभ मिल रहा है। दूध की कीमतों को लेकर गांव की गलियों से दिल्ली की सड़कों तक विरोध जता चुके अहलूवालिया दुग्ध उत्पादक किसानों की आवाज भी हैं। कुछ साल पहले उन्होंने गैर मिलावटी समाज ग्वाला गद्दी समिति बनाई, जिसमें आज कई राज्यों के पांच लाख किसान हैं।

गैर मिलावटी समाज ग्वाला गद्दी क्या है? गैर मिलावटी समाज की मुहिम के बारे में ग्वाला गद्दी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मोहन सिंह अहलूवालिया बताते हैं, 'दूध के दाम बढ़ाने के लिए वर्ष 2011 में जंतर मंतर से लेकर संसद तक हमने सड़कों पर दूध फैलाकर विरोध जताया था, जिसमें ग्वाला गद्दी के कई किसान शमिल थे। लगभग छः महीने हम लोगों ने आंदोलन किया। किसी भी बड़े नेता को नहीं छोड़ा जिससे इस मुद्दे पर मुलाकात न की हो।'

मोहन सिंह अहलूवालिया आगे बताते हैं, 'उसी बीच दिल्ली की सीएम ने मुझसे कहा था कि आप दूध बगैर मिलावट का पिलाइए। तब हमने कोशिश करके तकरीबन 84 हजार किलो दूध रोजाना दिल्ली में बगैर किसी मिलावट के पिलाया था। उसके बाद अपने आप समझ आ गया जब बिना मिलावट के दूध उपलब्ध होगा तो किसान को खुद दूध की कीमत मिल जाएगी।'

हरियाणा में चंडीगढ़ से पंचकूला मार्ग चलने पर खेड़ी गांव पड़ता है जहां पर मोहन सिंह की 'गैर मिलावटी समाज ग्वाला गद्दी' का मुख्यालय है। यहीं से डेरी उद्योग की नई रोशनी

निकल रही है। इस समिति में कई राज्यों के दूध उत्पादकों द्वारा अलग-अलग जगह से उत्पादित देशी गाय का शुद्ध घी, पनीर, दही, छाछ और मक्खन बनाया जाता है, जिसको विदेशों में बेचा जा रहा है।

गैर मिलावटी समाज की मुहिम मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब और हरियाणा राज्य के पांच लाख से ज्यादा किसानों तक पहुंच गई है। अहलूवालिया के मुताबिक हमसे जुड़े पशुपालक किसी प्रकार का खतरनाक पेस्टीसाइड का प्रयोग नहीं करते हैं, ताकि दूध या उसके उत्पादों की शुद्धता बरकरार रहे। यही वजह है कि हमारे उत्पादों को अमेरिका ने कैटेगरी वन में रखा है।

'ग्वाला गद्दी में तैयार घी अमेरिका, सिंगापुर, यूक्रेन, दुबई और बहरीन भेजा जा रहा है। इसके अलावा, हमें कई मुल्कों से भी ऑफर मिले हैं कि हम अपने उत्पाद वहां भी बेचे।' मोहन सिंह गर्व से बताते हैं, 'अमेरिका में हमको कैटगरी वन में रखा गया है। अभी हमारे जो दूध से उत्पाद यहां से जा रहे हैं, उसका टेस्ट नहीं होता है सीधे हम उपभोक्ता तक डिलीवर कर सकते है। साथ ही सिंगापुर के प्रसिद्ध मुस्तफा मॉल में भी हमारे डेरी प्रोडक्ट को रखा गया है।'

एनिमल वेलफेयर बोर्ड के सदस्य मोहन सिंह अहलूवालिया वही शख्स है, जिनकी दूध पर आई एक रिपोर्ट ने देश में हंगामा मचा दिया था। 2018 में आई अपनी एक रिपोर्ट में उन्होंने कहा था कि देश में बिकने वाले 68 फीसदी दूध और उससे बने उत्पाद नकली हैं। देश में दूध की स्थिति को देखते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन को भारत को एडवाइजरी तक जारी करनी पड़ी थी।

विदेशों में गैर मिलावटी दूध उत्पादों को बेचकर मोहन को जो कीमत मिल रही है उससे वह अपने साथ जुड़े किसानों को उसकी लागत से अधिक कीमत दे पा रहे हैं।

पूरे देश में दूध की कीमतों को लेकर किसान परेशान हैं कई किसान संगठन न्यूनतम सर्मथन मूल्य तय करने की बात भी कर रहे हैं, लेकिन मोहन सिंह की इस मुहिम ने और डेरी किसानों के लिए एक उदाहरण पेश किया है। उन्होंने इस मुहिम को एक नारा भी दिया है 'कोई दान नहीं, कोई चंदा नहीं, कोई सब्सिडी नहीं बस काम के बदले दाम।'

एक यात्रा का जिक्र करते हुए अहलूवालिया कहते हैं, 'हिमाचल के किन्नौर, रामपुरबसेर, बिलासपुर, कांगड़ा जिले में गया। मैंने वहां देखा कि दूध की कीमतें किसानों को बहुत कम मिल रही है। 14 से 15 रुपए में दूध मिल रहा था। तो मैंने उनको बोला कि 10 दिन के लिए दूध बेचना बंद कर दीजिए। उस दूध को लोगों को बिना किसी मिलावट के निःशुल्क पिलाईए और मिल्क मंडी एक छोटी सी बना करके और लोगों को बाजार में उस दूध को लेकर बैठ जाइए।'

वह आगे कहते हैं, 'मेरे कहने पर उन्होंने ऐसा किया। लोग उनके पास आते हैं वो बताते थे कि यह शुद्ध दूध है, तो लोग बर्तन लेकर धीरे-धीरे आने लगे। फिर उन लोगों ने मुझे बताया कि कोई भी ऐसा किसान नहीं आया, जिसने 35 रुपए से कम दाम उनको दिया हो।'

भारत दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश है। वर्ष 2018 की बात करें, तो देश में 176.3 मिलियन टन दूध का उत्पादन हुआ। विश्व के कुल दूध उत्पादन में भारत की हिस्सेदारी लगभग 20 फीसदी है, लेकिन इसके व्यापार से जुड़े किसानों को उनकी लागत के सही दाम नहीं मिल पा रहे हैं।

दूध में उपलब्ध फैट और एसएनएफ के आधार पर ही दूध

की कीमत तय होती है। कोऑपरेटिव की तरफ से दूध के जो दाम तय किए जाते हैं, वह 6.5 फीसदी फैट (वसा) और 9.5 फीसदी एसएनएफ के होते हैं। इसके बाद जिस मात्रा में फैट कम होता जाता है उसी तरह कीमत में कमी आती है। जो किसान बाजार में दूध बेच देते हैं यानी जो ग्राहकों तक सीधे दूध को पहुंचाते हैं उन्हें तो काफी फायदा हो जाता है, लेकिन जो लोग ऐसा नहीं कर पाते उन्हें मजबूरन दूध को तमाम निजी डेरी कंपनियों के केंद्रों पर औने-पौने दाम पर बेचना पड़ता है।

किसानों को दूध के दाम कैसे मिल सकते हैं ?

इसके बारे में मोहन कहते हैं, 'किसान सोचता है कि जो कॉपरेटिव हैं या फिर जो और कंपनियां हैं वो हमको कीमत दे देंगी ऐसा बिल्कुल नहीं है। किसान को छोटे-छोटे कॉपरेटिव बनाने होंगे नहीं तो एफपीओ और स्वयं सहायता समूह बनाकर दूध को बेच सकते हैं। इसके अलावा गाँव, कस्बे और शहर से लेकर अपनी स्थानीय स्तर पर मंडी बनाए मिल्क का बाजार बनाए और यह चिंतन करें कि हमें दूध को यही बेचना हैं ये चिंतन न करे कि दिल्ली जाकर दूध बेचना है।'

ग्वाला गद्दी से जुड़े किसानों को दी जाती है हर सुविधा

'देश की सीमा पर जैसे जवान काम करता है वैसे ही पशुपालक सुबह चार बजे उठकर चाहे गर्मी, बरसात और सर्दी हो काम करता है। उनको चारा पानी डालता है बड़ी मेहनत के साथ वह दूध का उत्पादन करता है। तो उनको किसी भी प्रकार की समस्या है तो चाहे वो पशुपालक की हो, दूध की कीमतों को लेकर हो, पशुचिकित्सा पर हो हम काम करते हैं।' मोहन सिंह ने बताया।

समिति से जुड़े किसानों को समय-समय पर किया जाता है प्रेरित

ग्वाला गद्दी से जुड़े किसानों को दूध से बने उत्पादों के अच्छे दाम मिल सके। इसके लिए समय पर टीम बनाकर उनको प्रेरित किया जाता है। मोहन सिंह बताते हैं, 'हमसे जुड़े किसानों में नए-नए सुधार करना और ग्वालों का इतिहास बताना हमारा काम है। उनको संगीत और नाटक के माध्यम से उनकी ही स्थानीय भाषा में प्रचार-प्रसार करते है।'

देश में मिलावटी दूध का है करोबार

किसानों को दूध के सही दाम न मिलने की एक वजह मिलावटी दूध भी है। किसान संगठन ने कई बार मिलावटी दूध को बंद करने और इसके लिए कड़े कानून बनाने की बात कही है। ग्वाला गद्दी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और एनिमल वेलफेयर बोर्ड के सदस्य मोहन सिंह अहलूवालिया ने अपनी एक रिपोर्ट में सितंबर 2018 में कहा था कि देश में बिकने वाले 68 फीसदी दूध और उससे बने उत्पाद नकली हैं।

इस मिलावटी कारोबार का उदाहरण देते हुए मोहन कहते हैं, 'देश में दूध का उत्पादन इतना नहीं है, जितनी खपत है। किसी गाँव में 1000 घर हैं, तो सिर्फ 400 घरों में ही गाय-भैंस हैं। यही गाँव के बचे 600 लोगों को दूध देते हैं। यानी उनको देने के बाद वो दूध नहीं बचता जो बाहर जा सके। ऐसे में अगर गांवों में ही पर्याप्त दूध नहीं तो शहरों में कैसे पहुंच रहा?' वो लोगों से भी अपील करते हैं कि उपभोक्ताओं को चाहिए, सीधे किसानों से दूध खरीदें।

□□

साभार : गांव कनेक्शन

अगर पशु ने खाया विषाक्त चारा, सताएंगे उसे दस्त, बदहज़मी और अफारा।

AYURVET™

आयुर्वेट के उत्पाद, पाचन समस्याओं से दिलाएं निदान

डायरोक
ड्राई सस्पेंशन

दस्त की शीघ्र एवं प्रभावी रोकथाम के लिए

विशेषताएं

- दस्त की शीघ्र रोकथाम करे
- पतले गोबर को ठीक करे
- पाचन में सहायक सूक्ष्मजीवियों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाए

सेवनविधि

- 30 ग्राम, पांच गुना पानी में अच्छी तरह मिलाकर पशुओं को दिन में दो बार पिलाएं
- गंभीर स्थिति में हर 6 घंटे के बाद पिलाएं

पैक

30 ग्राम

1 किलोग्राम

पचोप्लस
बोलस

अपाचन व अरुचि में प्रभावशाली

विशेषताएं

- पाचन क्रिया को सुदृढ़/सुचारू करे
- बुखार व संक्रामक रोगों के कारण कम हुई भूख को ठीक करे
- पाचन में सहायक सूक्ष्मजीवियों की संख्या बढ़ाने तथा उनके विकास के लिए रुमैन पी.एच. को नियंत्रित करे

सेवनविधि

- दो बोलस दिन में दो बार, 2-3 दिनों तक अथवा पशुचिकित्सक के निर्देशानुसार दें।

पैक

4 बोलस की एक स्ट्रिप

अफानिल
इमलशन

अफारा की परेशानी से राहत के लिए

विशेषताएं

- पशु के पेट (रुमैन) में बने अफारा एवं झाग को कम करे
- पशु के पेट (रुमैन) में रूकी गैस को जल्द बाहर निकाले
- पाचन में सहायक सूक्ष्मजीवियों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाए

सेवनविधि

- 50 मि.ली. दिन में दो बार, 2 दिनों तक पिलाये अथवा पशुचिकित्सक के निर्देशानुसार दें

पैक

100 मि.ली.

अपनी बताएं और पुस्तिका नि:शुल्क पाएं

पुस्तिका- सफलता गाथाएं-कृषि एवं पशुपालन, सतत् विकास की ओर
पृष्ठ-64 **प्रकाशन**-आयुर्वेट लिमिटेड

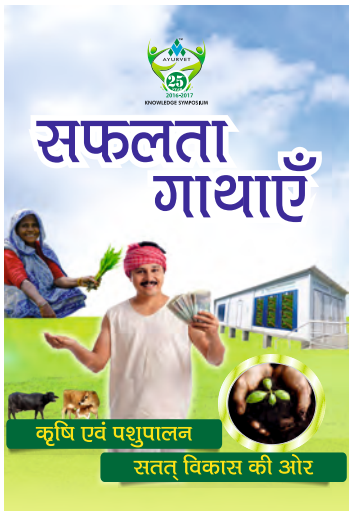

कहते हैं कि एक की सफलता दूसरे के लिए आदर्श बन जाती है। आयुर्वेट लिमिटेड ने इस बात को समझा और उन किसानों से संपर्क किया, जिन्होंने पशु आहार, खाद्य, ऊर्जा, उर्वरक और कौशल विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर दिखाया। हमने ऐसे 52 किसान बहनों-भाइयों से बातचीत कर उनकी सफलता की कहानी, उन्हीं की जुबानी एकत्र कर, एक रंगीन आकर्षक पुस्तिका तैयार की 'सफलता गाथाएं-कृषि एवं पशुपालन, सतत् विकास की ओर'।

अब तक आपकी भी जिज्ञासा बन गई होगी कि इस पुस्तिका को देखा जाए। अवश्य, हम इसे आप तक जरूर पहुंचाएंगे, पर हमे आपसे से भी कुछ जानकारी चाहिए अपने कार्य उपलब्धि के बारे में 100 शब्दों की जानकारी हमें लिख भेजें। साथ ही एक फोटो भी और हां मोबाइल नंबर अवश्य लिखें। आपका पत्र मिलते ही हम आपको यह पुस्तिका भेज देंगे।

□□

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के सजिल्द अंक उपलब्ध

हमारे बहुत से पाठक आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के अंकों को संजोकर रखते हैं, लेकिन कई बार उनसे वह अंक छूट जाते हैं। इसके अलावा, बहुत से ऐसे लोग हैं, जो आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के वर्ष 2017 के 12 अंक प्राप्त करना चाहते हैं। उनके लिए खुशखबरी यह है कि इस वर्ष यानि वर्ष 2017 के सभी अंक बाइंड कर सजिल्द उपलब्ध करवाएं जा रहे हैं। इसके अलावा, वर्ष 2016 के सजिल्द अंकों की भी कुछ प्रतियां उपलब्ध हैं। चूंकि इसकी प्रतियां सीमित हैं अत: आपसे अनुरोध है कि अपनी प्रति जल्द से जल्द बुक करवाएं। एक सजिल्द प्रति की कीमत 400/- रुपए (डाक खर्च अलग) है। राशि ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली के नाम भिजवाएं।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:-
दूरभाष: 91-120-7100201

पशुचिकित्सक से जुड़े सवाल

आप पूछे विशेषज्ञ बताएं

इस स्तंभ के अंतर्गत आपके सवाल होंगे तो हमारे विशेषज्ञ के जवाब, हमें पत्र लिखें। आपसे अनुरोध है कि पत्र टाइप किया हुआ अथवा साफ-साफ लिखा हो। पहले अपना नाम लिखिए, पता लिखिए और फिर लिखिए सवाल, साथ ही आप अपनी फोटो भी भेज सकते हैं। हमारे इस बार के विशेषज्ञ हैं डॉ. पी. के. श्रीवास्तव, वरिष्ठ पशुचिकित्सक

डॉ. पी.के. श्रीवास्तव
वरिष्ठ पशुचिकित्सक

प्र. 1 मेरी गाय को आठ महीने हो गए हैं गाभिन हुए। उसे कौन सा तरल कैल्शियम दें? सचिन, सोनीपत

उ. 1 कैल्शियम दुधारू पशु का दूध बढ़ाने के लिए दिया जाता है। खनिज मिश्रण पशु को उसके शरीर के रख-रखाव के लिए देते हैं। जब दुधारू पशु दूध देता है, तो लगभग 1.2 ग्राम कैल्शियम प्रति लीटर दूध से बाहर निकलता है। इससे शरीर में कैल्शियम की कमी आ जाती है। पशु का दूध कम हो जाता है व पशु कमजोर हो जाता है। इस कमजोरी से कई बार पशु गरमाता नहीं है व गरमाए तो कृत्रिम गर्भाधान करने के बावजूद उसका गर्भ नहीं ठहरता है। इसी कैल्शियम की कमी को दूर करने के लिए उसे कैलधन वी प्लस 50 मिलीलीटर प्रतिदिन देते हैं। जब पशु के ब्यांत में दो महीने रह जाते हैं, तो पशु का दूध सूखा दिया जाता है। दूध सूख जाने के कारण कैल्शियम पशु के शरीर में रहता है, इसलिए उसे कैल्शियम की जरूरत नहीं पड़ती है। इस समय पशु को खनिज मिश्रण की जरूरत होती है। इसके खनिज व विटामिन पशु को स्वस्थ रखने के लिए चाहिए। अब आपके पशु के शरीर से कैल्शियम नहीं निकल रही है, तो उसे कैल्शियम देने की कोई आवश्यकता नहीं है। आप अपने पशु को केवल खनिज मिश्रण (आयुमिन वी-5) 50 ग्राम प्रतिदिन दें। अगर इस समय आप अपने पशु को तरल कैल्शियम देंगे, तो उसके शरीर (खून) में कैल्शियम की मात्रा बढ़ जाती है, इससे पशु को अपने शरीर में कैल्शियम बनाने की जरूरत नहीं पड़ती व उसके अपने शरीर में कैल्शियम बनाने की प्रक्रिया बंद हो जाती है। इसका नतीजा यह होता है कि जब पशु का ब्यांत होता है, तो पशु के शरीर में कैल्शियम बनाने की प्रक्रिया बंद होने की वजह से पशु में कैल्शियम की कमी हो जाती है। इससे वह बैठ जाता है व उसे मिल्क फीवर (दुग्ध ज्वर) हो जाता है। इसमें अगर पशु का ठीक समय पर इलाज हो जाए तो वह बच जाता है, परंतु इलाज में देरी पशु के लिए हानिकारक भी हो सकती है। अभी आप अपने पशु को आयुमिन वी-5 खनिज मिश्रण 50 ग्राम प्रतिदिन दें। लैक्टेड जैल की एक बोतल ब्यांत से पहले तथा दूसरी बोतल ब्याने के बाद 6 से 18 घंटे के भीतर दें, तो मिल्क फीवर रोग होने की संभावना को कम किया जा सकता है। बाद में आप कैलधन-वी प्लस कैल्शियम शुरू कर दें। आयुमिन वी-5 के अलावा आप अपने पशु को पेट के कीड़ों की दवाई दें और पशु आहार बंद कर उसे दलिया शुरू कर दें।

प्र. 2 मुझे अपनी भैंस का कृत्रिम गर्भाधान करवाएं हुए 20 दिन हो गए हैं। अब वह खा-पी नहीं रही है। क्या करें?

अजीत, शाहबाद

उ. कृत्रिम गर्भाधान से पशु के खाने-पीने का कोई संबंध नहीं है। हां, गरमाने के दौरान पशु का खाना पीना 1-2 दिन के लिए कम हो जाता है, जो यह लक्षण खत्म होने के बाद अपने आप सामान्य हो जाता है। अभी आपका पशु खा-पी नहीं रहा है। आप उसका परीक्षण पशु चिकित्सक से करवाएं। अगर यह बुखार की वजह से है, आपके पशु का बुखार का इलाज होगा, परंतु अगर आपके पशु को बुखार नहीं है, तो हो सकता है कि आपका पशु नेगेटिव एनर्जी बैलेंस में है, जिसके लिए उसे शायद नाड़ी में ग्लूकोज चढ़वाना पड़े। इसलिए आप अपने पशु का परीक्षण अतिशीघ्र पशु चिकित्सा अधिकारी से करवाएं। पशुचिकित्सक की सलाह से कीटोरोक देने से भी लाभ होता है। □□

आयुर्वेट पशु स्वास्थ्य संसार

खोज खबर

राज्य मंडियों को खत्म करें

केंद्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने कहा कि राज्यों को कृषि उपज मंडियों (एपीएमसी) को छोड़ कर इलेक्ट्रॉनिक नेशनल एग्रीकल्चर मार्केट (ई-नाम) को अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है, ताकि किसानों को उनके उत्पादों की बेहतर कीमत मिल सके। उन्होंने राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) द्वारा आयोजित कार्यक्रम में कहा कि केंद्र सरकार ई-नाम को बढ़ावा दे रही है और कई राज्य सरकारें इसे अपने स्तर पर बढ़ावा देने को सहमत है। इसके साथ ही हम यह भी सुनिश्चित कर रहे हैं कि राज्य एपीएमसी को छोड़ें। इसमें कोई शक नहीं कि एक समय पर एपीएमसी ने अपनी भूमिका अच्छे से निभाई थी, लेकिन आज मंडियों के साथ कई सारी दिक्कतें जुड़ी हैं, हर राज्य में ये मंडियां इतनी प्रभावी नहीं रह गई हैं कि किसानों को उनके उत्पादों की बेहतर कीमत दिलाने में मददगार साबित हो सकें। हम राज्यों से बात कर रहे हैं कि वे एपीएमसी को भंग कर किसानों के लिए ई-नाम अपनाएं।

सप्ताह में दो दिन गांव में सेवाएँ देंगे पशु चिकित्सक

म.प्र. पशुपालन मंत्री श्री लाखन सिंह यादव ने निर्देश दिये हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में पशु चिकित्सकों की कमी को देखते हुए शहरी क्षेत्रों में पदस्थ चिकित्सक अब सप्ताह में दो दिन अनिवार्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी सेवाएँ देंगे। श्री यादव ने कहा कि सर्वाधिक दुधारू एवं खेती के उपयोग में आने वाले पशुओं का पालन ग्रामीण क्षेत्रों में किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सकों के अभाव में इन पशुओं को पर्याप्त चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हो पाती हैं। अधिकतर चिकित्सक अपनी सेवाएँ शहरी क्षेत्रों में देना चाहते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में पदस्थ चिकित्सकों पर दो-तीन अन्य चिकित्सालयों का प्रभार होने के कारण वे अपनी संतोषप्रद सेवाएँ नही दे पा रहे हैं। पशुपालन मंत्री श्री यादव ने ग्रामीण क्षेत्रों में पशु चिकित्सकों द्वारा सप्ताह में दो दिन अनिवार्य सेवाएँ देना सुनिश्चित करने के निर्देश जारी कर दिये हैं। यह व्यवस्था संचालनालय तथा संभागीय कार्यालयों में पदस्थ पशु-चिकित्सकों और सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्राधिकारियों पर भी लागू होगी।

उत्तराखंड सरकार का बड़ा निर्णय
खेतों में रसायन प्रयोग पर होगी जेल

उत्तराखंड को जैविक राज्य के रूप में स्थापित करने के लिए राज्य सरकार ने अहम फैसला लेते हुए 13 नवंबर 2019 को कैबिनेट बैठक में उत्तराखंड जैविक कृषि विधेयक 2019 को स्वीकृति दे दी। जैविक कृषि विधेयक का उद्देश्य राज्य में जैविक खेती को बढ़ावा देकर जैविक उत्तराखण्ड ब्राण्ड स्थापित करना है। परम्परागत कृषि विकास योजना के अंतर्गत फिलहाल 2 लाख एकड़ भूमि में जैविक खेती हो रही है, जिसमें 10 ब्लाकों को जैविक ब्लॉक घोषित किया जाएगा। प्रथम चरण में इन ब्लॉकों में किसी भी तरह के केमिकल, पेस्टीसाइट, इन्सेस्टिसाइट बेचने पर पूर्णतः प्रतिबन्ध होगा। जैविक ब्लॉक में रासायनिक अथवा सिंथेटिक खाद, कीटनाशक, खरपतवारनाशक/पशुओं को देने वाले चारे में रसायन के प्रयोग पर रोक होगी। उल्लंघन पर एक वर्ष की कैद और एक लाख रुपये तक जुर्माने का प्रावधान होगा। 10 चिन्हित ब्लॉक में इसके सफल रहने पर इसे पूरे प्रदेश में लागू किया जाएगा। जिन ऑर्गेनिक उत्पादों का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) केंद्र

सरकार ने घोषित नहीं किया होगा, उनकी एमएसपी उत्तराखंड सरकार घोषित करेगी। ऐसा करने वाला उत्तराखण्ड देश का पहला राज्य होगा। सरकार के इस निर्णय से किसानों को खेती के साथ पशुपालन भी करना होगा, क्योंकि बाजार से गोबर खरीदना महंगा होता है। जैविक खाद कहकर बेची जा रही खाद भी विश्वास करने योग्य नहीं है।

कृषि सांख्यिकी पर 8वां अंतराष्ट्रीय सम्मेलन

कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर), कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार 18 से 21 नवंबर तक नई दिल्ली में 'कृषि सांख्यिकी पर 8वां अंतराष्ट्रीय सम्मेलन-2019 (आईसीएएस -VIII)' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के तहत कृषि सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग की सक्रिय भागीदारी और खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ), संयुक्त राष्ट्र, अमेरीकी कृषि विभाग (यूएसडीए); आईएस-आईकास, यूरोस्टेट, सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय और विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय संगठन के निकट सहयोग से किया गया। राष्ट्रीय कृषि विज्ञान केंद्र परिसर, नई दिल्ली में 18 नवंबर, 2019 को उद्घाटन समारोह में विभिन्न मंत्रालयों, सम्मेलन प्रतिनिधियों, अधिकारियों, स्वयंसेवकों और छात्रों सहित कुल 1200 प्रतिभागी आए।

पीएम-किसान योजना से लक्ष्य से कम किसान जुड़े

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की महत्वाकांक्षी और छोटे किसानों का वित्त पोषण करने वाली पीएम किसान योजना में इस वर्ष अभी तक लक्ष्य से कम किसान जुड़े हैं। योजना में पूरे देश में करीब 14.5 करोड़ किसानों के पंजीकृत होने का अनुमान था और इसके लिए केन्द्र सरकार ने 75 हजार करोड़ का प्रावधान रखा था। कृषि मंत्रालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार अब तक इस योजना में केवल 7 करोड़ 63 लाख किसानों ने ही पंजीयन कराया है। 4 नवम्बर तक पीएम किसान योजना में पंजीकृत किसानों में से 7.17 करोड़ किसान 2,000 रु. की प्रथम किश्त ले चुके हैं। वहीं 6.12 करोड़ किसान दूसरी किश्त और 3.65 करोड़ ने तीसरी किश्त भी प्राप्त कर ली हैं। प्रधानमंत्री किसान योजना में समय पर रजिस्ट्रेशन से चूक जाने पर आगे की किश्त नहीं मिलती है।

सूखे की मार झेल रहे उस्मानाबाद के किसानों के लिये संजीवनी बनी बकरियां

साल दर साल सूखे की मार झेल रहे उस्मानाबाद के किसानों के लिये दो जून की रोटी जुटाना मुश्किल हो गया था और ऐसे में बकरियां उनके लिये संजीवनी साबित हुई हैं, जिनके दूध से बने साबुन को बेचकर अब उनका चूल्हा जल रहा है। एक स्थानीय गैर सरकारी संगठन की मदद से महाराष्ट्र के उस्मानाबाद जिले के 25 गांवों के 250 परिवार अब साबुन बनाने का काम कर रहे हैं। यह परियोजना उन किसानों के परिवारों की मदद के लिये शुरू की गई जिन्होंने अभाव के कारण आत्महत्या कर ली या बुरे दौर का सामना कर रहे हैं। एक संस्था ने पीड़ित परिवारों को आर्थिक मदद देने की बजाय उन्हें आजीविका चलाने का तरीका सिखाया। बताया गया कि उस्मानाबादी बकरियों को बेचने की बजाय उन्हें पालकर मुनाफा कमाया जा सकता है। चूंकि विटामिन ए, ई, सेलेनियम और अल्फा हाइड्रोक्सी अम्ल से भरपूर बकरी का दूध त्वचा के रोगों का उपचार करता है। किसानों को एक लीटर बकरी के दूध के 300 रूपये मिलते हैं और एक दिन के काम का 150 रुपया दिया जा रहा है। इस काम में 250 परिवार और उनकी 1,400 बकरियां शामिल हैं। संस्था इस परियोजना में 10,000 और परिवारों को जोड़ने जा रही है, जिनके बनाये साबुन राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेचने की भी योजना है। उप संभागीय कृषि अधिकारी भास्कर कोलेकर ने कहा कि हमारे विभाग ने इन गांवों के किसानों को बकरियां दी और इन बकरियों के दूध को साबुन परियोजना के लिये इस्तेमाल करेंगे। □□

-आयुर्वेद डेस्क

कीटोसिस एवं नेगेटिव एनर्जी बैलेंस से छुटकारा पाएं

AYURVET™

कीटोरोक अपनाएं

कीटोरोक के फायदे

- लीवर की बेहतर सुरक्षा कर कीटोसिस से बचाव और इलाज में लाभदायक
- शरीर में सामान्य ग्लूकोज़ एवं ऊर्जा स्तर को बनाएं रखे
- दूध उत्पादन बढ़ाएं और अधिकतम उत्पादकता प्राप्त करने में मदद करे

पशुचिकित्सकों द्वारा अपनाया गया वैज्ञानिक रूप से जांचा परखा भरोसेमंद हर्बल उपाय

कीटोरोक

कीटोसिस की रोकथाम एवं उपचार के लिए

उपचार के लिए:

200 मि.ली. प्रतिदिन दो बार *2* दिनों तक, अगले *2* दिन *100* मि.ली. दिन में एक बार

क्या पशु भी खर्राटे लेते हैं

- डॉ. सुनील नीलकंठ रोकड़े

मानव खर्राटे लेते हैं यह सर्वविदित है। लेकिन कभी-कभी पशु भी खर्राटे लेते हैं यह जानकर आश्चर्य होगा। जी हां कभी-कभी किसी पशु को विशिष्ट बीमारी होने से वह भी खर्राटे लेते हैं। यह बीमारी सभी प्रकार के पशुओं में हो सकती है। इस रोग को ग्रामीण इलाकों में 'नाकाडी' या 'घुरघुरी' या स्थानिक भाषा में अन्य नाम से भी जाना जाता है।

कारण

इस रोग का फैलाव विभिन्न प्रकार के कारण होता है। इनमें प्लॅनीरबीस, लिमनिया जाति की लार्वा की बढ़वार होकर यह रोग निर्माण करने वाले फरकोसर्कस सर्केरिया पानी में प्रवेश करते हैं। ऐसा दूषित पानी तंदुरूस्त पशु ने पी लिया, तो उसे इस रोग की बाधा हो जाती है। यह जंतु पशु के नाक के नजदीक की चमड़ी में प्रवेश करते हैं और वहां तेजी से पनपते हैं। इन परोपजीवियों की नाक में मौजूद धमनियों में संपूर्ण बढ़वार होती हैं। इन परोपजीवियों में कुछ नर तथा कुछ मादा होते है। इनका मिलन होने के पश्चात मादा अंडे देती है। इन अंडों का बूमरंग नामक आदिवासी लोगों द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले हथियार की माफिक होता है। उनकी दुम पर चीन जैसे भाग होते हैं। इस भाग में बहुत ज्यादा तादाद में अंडे देने से तथा इन अंडों के विशिष्ट रचना की वजह से उस जगह इस रोग की शुरूआत होती हैं। उस जगह धमनियां फूल जाती हैं तथा नाक में बारबार चुभने से वहां पेशियों की फूलगोभी के माफिक बढ़वार होती हैं। उस जगह पीप भी तैयार होता है। इस पीप के जमाव के कारण जितनी हवा सांस लेने हेतु चाहिए उतनी हवा फेफड़ों में जाती नहीं हैं। जब पशु सांस लेता हैं तब एक अलग सा खर्राटे भरते वक्त आती है वैसे आवाज आती हैं। इसलिये इस रोग को खर्राटे रोग या 'स्नोरिंग डिसीज' कहते हैं।

लक्षण

इस रोग का प्रमुख लक्षण खर्राटे जैसी आवाज आना हैं। पशु की नाक से चिपचिपा पदार्थ बहता है तथा नाक में फूलगोभी जैसी पेशियों की बढ़वार दिखाई देती हैं। कभी-कभी नाक से बहने वाले स्त्राव में खून भी आता हैं। पशु बारबार छींकता रहता हैं।

उपचार

अनुभवी पशुओं के डाक्टर द्वारा पशु की तुरन्त जांच करवायें। नाक से बहते स्त्राव की पशुरोगविकृति शास्त्र प्रयोगशाला से जांच करवायें। रोग की तसल्ली होने पर ॲन्यीमलीन, सोडियम अन्टीमोनी टार्टरिट, ट्रायकोरोकोन, टार्टर इमेटीक इन दवाओं को डाक्टर की सलाह अनुसार दें।

बचाव

बाड़े में साफ-सफाई का पूरा ध्यान रखें। पशुओं को ताजा, साफ पानी पिलावें। पानी के टंकी की हर हफ्ते कम से कम एक या दो बार सफाई करें। उसमें काई (शैवाल) न बढ़ने दें।

टंकी के अंदरूनी भाग को ईट से घिसकर सफाई करें तथा चूने से लिपाई करें। चूना पाउडर डालकर थोड़ा पानी डालें। इससे होने वाली रासायनिक प्रक्रिया तथा गर्मी से काई, जंतु, कीड़े काफी हद तक मर जाते हैं। और टंकी साफ हो जाती हैं। चूना लगाने के बाद कुछ देर रुके। जब वह अच्छी तरह सूख जाये तब ताजा साफ पानी भरें। पानी के नल को साफ कपड़ा तथा जाली लगायें ताकि पानी में अगर कचरा है तो टंकी में ना गिरे।

पशुओं को जंगल में तालाब या नाले का पानी न पिलावें। विशेषकर अगर वहां की मौजूदगी है तो वहां कतई पानी न पिलावें। मोरचूद (नीला थोथा) या नमक डालने से काई (अल्गी) का नाश हो जाता हैं।

कीचड़ बीमार पशुओं को अलग जगह दूर बांधे तथा उनके चारा पानी का अलग प्रबंध करें। जब तक वे स्वस्थ नहीं होते तब तक उन्हें स्वस्थ पशुओं के साथ न रखें।

फेसकॉन या ब्लुसाईड जैसी कुछ दवायें बाजार में उपलब्ध होती हैं जिनके छिड़काव का नाश हो जाता है। इस प्रकार सावधानी बरतें तो अपने बहुमूल्य पशुधन को इस बीमारी से बचा सकते हैं तथा समय पैसे की बरबादी टाल सकते हैं। □□

मो. : 9850347022

पशु प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम

लाला लाजपतराय पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय (हिसार, हरियाणा)

द्वारा प्रमाणित

प्रशिक्षण स्थल

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन, विडाना, मुंडलाना चौकी

विषयः

- **दुधारू पशुओं का प्रबंधन** : दुधारू पशुओं की उत्तम नस्लें,दुधारू पशुओं का आधुनिक आवास, ग्रीष्मकाल एवं सर्दी ऋतु में दुधारू पशुओं का प्रबंधन, नवजात पशु, गाभिन पशु और दूध देने वाले पशुओं की देखभाल और उनका प्रबंधन, लाभदायक डेरी व्यवसाय।
- **दुधारू पशुओं का चारा प्रबंधन** : दुधारू पशुओं का संतुलित आहार एवं उसका महत्व, दुधारू पशुओं के लिए वर्ष भर हरे चारे का प्रबंधन–साइलेज अथवा अचार।
- **दुधारू पशुओं का रोग नियंत्रणः** दुधारू पशुओं की संक्रामक और गैर संक्रामक बीमारियां एवं उनकी रोकथाम, दुधारू पशुओं का टीकाकरण और उनका प्रबंधन, थनैला रोग का नियंत्रण, और दुधारू पशुओं में होने वाले चयापचय रोग एवं उनकी रोकथाम, दुधारू पशुओं में अन्तः एवं बाह्य परजीवियों का नियंत्रण, दुधारू पशुओं में होने वाले प्रजनन संबंधी रोग एवं उनकी रोकथाम, दुधारू पशुओं की प्रारंभिक प्राथमिक चिकित्सा, लौह रोग एवं उनकी रोकथाम।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : 8288954556, 9729288992, 8607272777, 996128765

सर्दी में पशुओं का रखरखाव

- के.एल. दहिया[1] एवं राहुल बराड़[2]

सर्दी के कारण यदि पशु बीमार होता है, तो इससे पशु का उपचार करवाने में पशुपालकों को आर्थिक हानि होने के साथ–साथ बीमार पशु कमजोर भी हो जाता है। इससे पशु के दूध देने की क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है व कई बार पशु दूध देना भी बंद कर देता है। कई बार बीमारी बढ़ने पर पशु की मौत भी हो जाती है। ऐसे में शैड के तापमान का खास ध्यान रखें। भैंस जाति के पशु सर्दी के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।

सर्दी के मौसम में पशुपालकों को अपने पशुओं को सामान्य दिनों की अपेक्षा अधिक देखभाल की आवश्यकता होती है। सर्दी के कारण यदि पशु बीमार होता है, तो इससे पशु का उपचार करवाने में पशुपालकों को आर्थिक हानि होने के साथ-साथ बीमार पशु कमजोर भी हो जाता है। इससे पशु के दूध देने की क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है व कई बार पशु दूध देना भी बंद कर देता है। कई बार बीमारी बढ़ने पर पशु की मौत भी हो जाती है। ऐसे में शैड के तापमान का खास ध्यान रखें। भैंस जाति के पशु सर्दी के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।

सर्दी के लक्षण

- सुस्त, थका हुआ सा बैठा रहना।
- आँख से पानी बहना।
- पशु की नाक से पानी और बलगम का बहना।
- पशु का जुगाली न करना।
- खान-पान में कमी या बिल्कुल ही नहीं खाना।
- दुग्ध उत्पादन में कमी।

- संक्रमण होने पर शरीर के तापमान में कमी होना।

यदि पशु को ठण्ड लगने का अंदेशा हो तो ऐसे में पशु पालक निम्नलिखित उपाय करें:

सर्द हवाओं से बचाएं

सर्द हवाओं से बचाने के लिए शैड के लिए रोशनदान, दरवाजों व खिड़कियों को टाट और बोरे से ढंक दें। इसके साथ ही यह भी ध्यान रखें कि शैड बिल्कुल भी पैक न हो अर्थात् शैड में थोड़ी-बहुत ताजी हवा भी आनी चाहिए। इसके लिए पल्ली या तिरपाल के निचले हिस्से को थोड़ा ऊपर कर देना चाहिए। इसी प्रकार पल्ली या तिरपाल के ऊपरी हिस्से को थोड़ा नीचे खिसका देना चाहिए। ऐसा करने से निचले हिस्से से ताजी हवा अन्दर आएगी, जो गर्म होने के उपरान्त ऊपरी खुले हिस्से से बाहर निकल जाएगी। ऐसा करने से श्वास संबन्धी रोग होने की सम्भावना कम रहेगी।

साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें

सर्दी के मौसम में पशुओं के नीचे सफाई का विशेष ध्यान रखें।

सर्दियों में पशुओं की विशेष देखभाल, यह जाने जरूरी बात

सर्दियों का मौसम आने वाला है। ऐसे में स्वयं के साथ पशुओं की विशेष देखभाल की जरूरत है। ठंड में इन्हें सर्दी लगने की आशंका होती है, जिससे इनके स्वास्थ्य पर असर पड़ता है। इतना ही नहीं ठंड़ के कारण इनके दूध उत्पादन की क्षमता भी प्रभावित होती है। कुल मिलाकर देखा जाए, तो अंत में इससे आपका ही नुकसान होता है। इसलिए जरूरी है कि ठंड के मौसम में पशुओं की देखभाल की विधि आपको मालूम हो।

पशुशाला में करें ये प्रबंध

पशुओं को सर्दी के प्रकोप से बचाने के लिए पशुशाला में रात को बोरी या टाट बांधकर हवा को आने से रोकें। जहां से भी ठंडी हवा आने की जगह है उस जगह को ढक दें। ध्यान रहे कि ठंडी हवा के प्रभाव में आपके पशु को कई तरह की बीमारियां हो सकती हैं।

आहार एवं जल प्रबन्धन

अधिक सर्दी से बचने हेतु दुधारू पशुओं की ऊर्जा की आवश्यकता बढ़ जाती है। इसलिए पशु को प्रतिदिन 1 किलोग्राम दाना मिश्रण प्रति पशु, उनकी अन्य पोषण जरूरत के अतिरिक्त खिलाना दें। अच्छी गुणवत्ता के हरे चारे जैसे बरसीम व जई के साथ-साथ सूखा चारा जैसे गेंहूँ की तुड़ी (कम से कम 2-3 किलोग्राम प्रति पशु प्रतिदिन) भी अवश्य खिलाएं। खनिज-मिश्रण में फास्फोरस की मात्रा बढ़ा दें। पशुओं को गीला चारा बिल्कुल न दें, अन्यथा अफारा होने की संभावना बढ़ जाती है।

अत्यधिक दूध देने वाली गायों व भैसों के आहार में फु-फेंट सोयाबीन या बिनौले का प्रयोग करके राशन की उष्मा सघनता को बढ़ाया जा सकता है, जिससे इन पशुओं का दुग्ध उत्पादन बना रहता है।

आवास प्रबन्धान

वातावरण में धुंध व बारिश के कारण अक्सर पशुओं के बाड़ों के फर्श गीले रहते हैं, जिससे पशु ठंडे में बैठने से कतराते हैं। अच्छी गुणवत्ता का 6 इंच मोटा बिछावन तैयार करें। बिछावन प्रतिदिन बदले। रेत या मेट्रेस्स बिछावन पशुओं के लिए सर्वोत्तम है।

नवजात एवं बढ़ते बछड़े को रात के समय बंद कमरे या चारों ओर से बंद शेड में रखें, पर प्रवेश द्वार खुला रखें जिससे कि हवा आ जा सके। तिरपाल, पॉलिथिन शीट या खस की टाट/पर्दा का प्रयोग करके पशुओं को तेज हवा से बचाया जा सकता है।

स्वास्थ्य प्रबन्धान

बछड़े-बछड़ियों का विशेष ध्यान रखे, जिससे कि उनको सफेद दस्त, निमोनिया आदि रोगों से बचाया जा सके। पशुघर को चारों तरफ से ढकने से अधिक नमी बनती है, जिससे रोग जनक कीटाणु बढ़ते हैं।

रात में शेडों में हीटर प्रयोग कर सकते हैं। इस मौसम में अधिकतर दुधारू पशुओं के थनों में दरारें पड़ जाती है, ऐसा होने पर दूध निकालने के बाद पशुओं के थनों पर कोई चिकानी युक्त/एंटीसेप्टिक क्रीम अवश्य लगायें अन्यथा थनैला रोग होने का खतरा बढ़ जाता है। दूध दुहने के तुरंत बाद पशु का थनछिद्र खुला रहता है, जो थनैला रोग का कारक बन सकता है, इसलिए पशु को खाने के लिए कुछ दे देना चाहिए जिससे कि वह लगभग आधे घंटे तक बैठे नहीं, ताकि उनका थनछिद्र बंद हो जाए।

ज्यादा देर तक उन्हें गीले में न बैठने दें। धूप निकलने पर पशुओं को शेड के अंदर से बाहर निकालने के बाद शैड के चारों ओर लगी पल्ली या तिरपाल को खोल दें अर्थात् ऊपर की ओर खिसका दें। ऐसा करने से धूप अन्दर आएगी और गीले बिछावन को सूखने में सहायता प्रदान करेगी। ऐसा करने से शैड में उत्पन्न हुई अमोनिया गैस, जो श्वास रोग उत्पन्न करती है, भी बाहर निकल जाएगी।

शैड को गर्म रखना

पशु चिकित्सकों के अनुसारी सर्दी में रात का तापमान 15 डिग्री सेंटीग्रेड तक आने पर पशुबाड़े को गर्म रखने की सबसे अधिक जरूरत होती है। यदि पक्का शेड है, तो गेट पर तिरपाल लगाया जा सकता है। इससे भी कम तापमान होने पर अंगीठी की सहायता से शेड को गर्म रखा जा सकता है, लेकिन अंगीठी का धुआं शेड से बाहर निकालें। जब धुआं निकल जाए, तब अंगीठी को ऐसी जगह पर रखें, जहां पशु की पहुंच न हो। अंगीठी जलाने के दौरान पशुबाड़े में हवा की क्रॉसिंग का प्रबन्ध होना चाहिए।

ठण्डा पानी न पिलाएं

ठण्डा पानी पिलाने से खासतौर पर, छोटे बाल पशुओं में, खून की लाल रक्त कणिकाएं टूटने से हिमाग्लोबिन पेशाब में आना शुरू हो जाता है। इसलिए पशुओं को रात का ठण्डा पानी न पिलाएं।

पशुओं को ताजे पानी से नहलाएं

दोपहर से पहले ताजे पानी में पशुओं को नहलाएं। कमजोर पशुओं को नहलाने के बजाय सूखे कपड़े व पुआल से रगड़कर उसके शरीर की सफाई करें।

बाल पशुओं का विशेष ध्यान रखें

सर्दी के मौसम में पशुओं के बच्चों का भी ध्यान रखें। नवजात बाल पशु को खीस (ब्याने के बाद माँ का पहला दूध) अवश्य पिलाएं, इससे बीमारी से लड़ने की क्षमता में वृद्धि होती है। उन्हें अधिक दूध पिलाने के साथ-साथ अन्तः कृमिनाशक दवा भी अवश्य पिलानी चाहिए।

पैरासीटामोल की गोली

पशु को ठण्ड लगने पर सबसे पहले चिकित्सक को दिखाएं। यदि रात के समय परेशानी है तो पशु पैरासिटामोल की गोलियां दे सकते हैं। 50 किलोग्राम के पशु को 100 मिलीग्राम की गोली दी जाती है। ऐसे में बड़ी भैंस को पांच-छः गोलियां दी जा सकती हैं। सर्दी के मौसम में पशुपालक पैरासिटामोल की गोलीयां घर पर रखें। पशु को गर्म पानी की भांप भी दी जा सकती है।

कुक्कुटों को अतिरिक्त गर्मी

कुक्कुट ऐसा पक्षी है जो शरीर का तापमान स्वयं स्थिर नहीं रख पाता है। एक दिन का चूजा जब फार्म पर आए, उसे 35 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान मिलना चाहिए। इसके लिए फार्म में पर्याप्त मात्रा में बिजली के 100-100 वाट के बल्ब लगाए जा सकते हैं। बुखारी का सहारा भी लिया जा सकता है। बाजार में गैस चलित उपकरण भी उपलब्ध हैं।

कुक्कुटों का भी रखें ध्यान

पोल्ट्री फार्मिंग हरियाणा का बड़ा व्यवसाय है। एशिया की मण्डी में चूजों की मांग को पूरा करने में हरियाणा पूरी भूमिका निभाता है। ऐसे में व्यवसायियों को अधिक सावधान रहने की जरूरत है। प्रति एक हजार मुर्गियों पर एक किलोग्राम गुड़ या शक्कर फीड में मिलाकर दें। पानी के साथ एक हजार मुर्गियों पर 100

मिलीग्राम जामुन का सिरका मिलाना चाहिए।

पशुओं को अतिरिक्त प्रोटीन दें

सर्दी के मौसम में पशु को अपने शरीर का तापमान बनाए रखने के लिए अधिक ऊर्जा की जरूरत होती है। ऐसे में अतिरिक्त प्रोटीन दी जा सकती है। नियमित रूप से गुड़, सरसों की खल, सोयाबीन की खल और अनाज में बाजरा दिया जा सकता है। छोटे बच्चों को पर्याप्त मात्रा में मां का दूध दिया जाना चाहिए।

अफारा से बचाएं

इस मौसम में पशुओं को अफारा होने की संभावना अधिक होती है। इसलिए हरा चारा खिलाने से पहले थोड़ा-सा सूखा चारा खिलाएं। फिर भी यदि पशु को अफारा की शिकायत हो तो अलसी या सरसों के तेल का प्रयोग करें।

धूप में पशुओं को बाहर बांधे

सर्दियों के दिनों में पशुओं को कुछ देर के लिए धूप में जरूर बांधें। हालांकि बिना धूप के ठंडी हवा में दिन में बाहर निकालना उनकी सेहत के लिए अच्छा नहीं है। धूप से उन्हें जरूरी पोषक तत्व मिलते हैं, जो उनकी सेहत के लिए लाभकारी हैं।

पशुओं को पहनाएं बोरी

ठंड के प्रकोप से बचाने के लिए पशुओं को जूट की बोरी पहनाएं। संभव हो तो एक सुरक्षित दूरी पर अलाव का प्रबंध करें।

टीकाकरण

सर्दियों में पशुओं को होने वाले रोग खासतौर पर मुँह पका-खुर पका रोग के प्रति अवश्य ही सचेत रहना चाहिए। इस प्रकार के रोगों से पशुओं को बचाने के लिए समय रहते अपने पशुओं को अवश्य ही टीकाकरण करवा लेना चाहिए।

पशु चिकित्सक से करें सम्पर्क

पशु को किसी भी प्रकार की परेशानी होने पर स्थानीय पशु चिकित्सक को बिना देरी किये अवश्य ही दिखाना चाहिए। ☐☐

-1 स्नातक, पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान(ग्लोबल सीटी, कुरूक्षेत्र, 2 पशु चिकित्सा सार्वजनिक स्वास्थ्य और महामारी विज्ञान, लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय(हिसार), ईमेलः rahulbrar55@gmail.com

कैलधन वी प्लस

दुग्धवर्धक जड़ी बूटिओं के फायदों सहित कैल्शियम सम्पूरक

अगर चाहिए दूध भरपूर,
उपयोग करो कैलधन वी जरूर।
होगा दूध में इजाफा,
डेरी में अधिक मुनाफा।।

1लीटर 5लीटर

वीटाधन-एच

विटामिन सम्पूरक

जब थनों की सुरक्षा की हो बात,
और भरपूर तंदरुस्ती का हो साथ।
होगी पशु स्वास्थ्य में वृद्धि,
विटाधन-एच से मिले सेहत और समृद्धि ।।

60मि.ली. 300मि.ली.

स्वस्थ बनाये, रोग भगाए, दूध बढ़ाये

ठंड के मौसम में से होने वाले रोग व उपचार

अफारा

ठंड के मौसम में पशुपालन करते समय पशुओं को जरूरत से ज्यादा दलहनी हरा चारा जैसे बरसीम व अधिक मात्रा में अन्न व आटा, बचा हुआ बासी भोजन खिलाने के कारण यह रोग होता है। इसमें पशु के पेट में गैस बन जाती है। बाईं कोख फुल जाती है। रोगग्रस्त होने पर पशु को आप **अफानिल** दें। इस दवा को पिलाने पर तुरंत लाभ होता है।

सर्दी के वातावरण में नमी के कारण पशुओं में खुरपका, मुंहपका तथा गलाघोटू जैसी बीमारियों से बचाव के लिए समय पर टीकाकरण करें।

निमोनिया

दूषित वातावरण व बंद कमरे में पशुओं को रखने के कारण तथा संक्रमण से यह रोग होता है। ऐसे में रोगग्रस्त पशुओं की आंख व नाक से पानी गिरने लगता है। उपचार के लिए बोबीटस देने से भी काफी आराम मिलता है, इस दवा को देने के अन्य फायदे भी बहुत-से हैं।

ठंड लगना

इससे प्रभावित पशु को नाक व आंख से पानी आना, भूख कम लगना, शरीर के रोएं खड़े हो जाना आदि लक्षण आते हैं। उपचार के लिए एक बाल्टी खौलते पानी के ऊपर सूखी घास रख दें। रोगी पशु के चेहरे को बोरे या मोटे चादर से ऐसे ढंके कि नाक व मुंह खुला रहे। फिर खौलते पानी भरी बाल्टी पर रखी घास पर तारपीन का तेल बूंद-बूंद कर गिराएं। भाप लगने से पशु को आराम मिलेगा।

इसके अलावा आप आयुमिन वी-5 दें सकते है, जिसमें मुख्यतः सभी प्रोटीन्स, विटामिन्स और मिनरल्स मिलाकर बनाया गया है। आप पशु को रेस्टोबल भी दें, जोकि पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और पशुओं को बीमारियों से काफी हद तक बचाता है।

ठंड के मौसम में प्रायः पशुओं को दस्त की शिकायत होती है। दस्त की शीघ्र रोकथाम के लिए अपने पशुचिकित्सक के परामर्श से पशु को डायरोक दें। साथ ही रुचामैक्स देने से भी तुरंत लाभ होता है।

बातें आपके काम की

- नवजात पशु को खीस जरूर पिलाएं, इससे बीमारी से लड़ने की क्षमता में वृद्धि होती है।
- गर्मी के लिए पशुओं के पास अलाव जला के रखें, पर पशु की पहुंच से दूर रखें। इसके लिए पशु के गले की रस्सी छोटी बांधे, ताकि पशु अलाव तक न पहुंच सके।
- पशुओं को खिलाया जाने वाला चारा भी इस तरह का हो, जिसकी पाचन क्षमता 60 प्रतिशत से अधिक हो।

- अगर दुधारू पशुओं को सर्दी के दिनों में संतुलित आहार के साथ-साथ आयुमिन-वी 5 (खनिज मिश्रण), रुचामैक्स एवं रेस्टोबल दिया जाए, तो पशु का दूध नहीं घटेगा।
- अनाज के तौर पर गेहूं का दलिया, खल, चना, ग्वार, बिनौला आदि दिया जाना चाहिए।
- बिनौले रात को पानी में भिगोकर रखें। सुबह पानी फेंक कर, उसे ताजे पानी में उबालकर पशु को दिन में दो बार खिलाएं।
- बाजरा पशुओं को कम हजम होता है, इसलिए बाजरा किसी भी संतुलित आहार/बाखर में 20 प्रतिशत से अधिक नही मिलाना चाहिए।
- पशु की खोर के ऊपर सैंधा नमक का ढेला रखें, ताकि पशु जरूरत के अनुसार उसको चाटता रहे।

राष्ट्रीय किसान दिवस (23 दिसंबर)

किसानों के मसीहा माने जाने वाले देश के छठवें प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह का जन्म 23 दिसंबर 1902 में हुआ था। चरण सिंह जी की जयंती के अवसर पर देश में किसान दिवस मनाया जाता है। इस दिन लोगों व किसानों को किसानी के प्रति जागरूक किया जाता है। किसानों के योगदान को समझाने हेतु यह पर्व मनाया जाता है। चौधरी चरण सिंह ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में भी काम किया है। चरण सिंह जी का मानना था कि खेती के केन्द्र में किसान है और किसान के साथ बड़ी कृतज्ञता से पेश आना चाहिए। किसान के श्रम का प्रतिफल अवश्य मिलना चाहिए। ये देश पहले से ही कृषि प्रधान देश रहा है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने किसानों को देश का सिरताज माना है।

चौधरी चरण सिंह जी ने प्रधानमंत्री कार्यकाल में रहते हुए किसानों के लिए कई महत्वपूर्ण योजनाएं लागू की। उनका मानना था कि जब तक देश का किसान सुरक्षित और संपन्न नहीं होगा देश कभी भी प्रगति नहीं कर सकता है। वे

नैतिकतावादी प्रधानमंत्री थे। चौधरी चरण सिंह जी के नेतृत्व में ही किसानों को उनका हक देने वाले विधेयक अर्थात जमींदारी उन्मूलन विधयेक वर्ष 1952 में पारित किया गया था। देश में लेखपाल पद का सृजन भी चरण सिंह जी ने ही किया था। इससे पहले पूरा कार्य पटवारी करते थे, परन्तु उन्होंने किसानों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए लेखपाल की नियुक्ति की थी। वे प्रधानमंत्री से पहले उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री, केन्द्रीय गृह मंत्री पद पर रहे। वे किसानों के सच्चे शुभचिंतक माने जाते थे।

राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस (14 दिसंबर)

भारत में हर साल 14 दिसम्बर को राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस मनाया जाता है। भारत में ऊर्जा संरक्षण अधिनियम वर्ष 2001 में ऊर्जा दक्षता ब्यूरो द्वारा लागू किया गया था। ऊर्जा दक्षता ब्यूरो एक संवैधानिक निकाय है, जो भारत सरकार के अधीन आता है और ऊर्जा के उपयोग को कम करने के लिए नीतियों और रणनीतियों के विकास में मदद करता है। भारत में ऊर्जा संरक्षण अधिनियम का उद्देश्य पेशेवर, योग्य और ऊर्जावान प्रबंधकों एवं लेखा परीक्षकों की नियुक्ति करना है,

जिनके पास ऊर्जा से संबंधित परियोजनाओं के नीति निर्धारण, वित्त प्रबंधन एवं क्रियान्वयन की विशेषज्ञता हो।

ऊर्जा संरक्षण का सही अर्थ ऊर्जा के अनावश्यक उपयोग से बचते हुए कम-से-कम ऊर्जा का उपयोग करना है, ताकि भविष्य में उपयोग हेतु ऊर्जा के स्रोतों को बचाया जा सके। ऊर्जा संरक्षण की योजना को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए हर इंसान को अपने व्यवहार में ऊर्जा संरक्षण को शामिल करना चाहिए। पूरे भारत में राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण के अभियान को और प्रभावशाली और विशेष बनाने के लिये सरकार द्वारा और अन्य संगठनों द्वारा लोगों के बीच में बहुत सी ऊर्जा संरक्षण प्रतियोगिताओं का आयोजन कराया जाता है। छात्र या संगठन सदस्य ऊर्जा संरक्षण दिवस पर स्कूल, राज्य, क्षेत्रीय या राष्ट्रीय स्तर पर चित्रकला प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती है। जीतने वाले छात्रों को 14 दिसंबर को राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस को विद्युत मंत्रालय सम्मानित करता है। हमारे वैज्ञानिक ऊर्जा के नए एवं वैकल्पिक संसाधनों की खोज व इसके विकास में लगे हुए हैं, पर हम नागरिकों का कर्तव्य है कि वे ऊर्जा के महत्व को समझें और ऊर्जा संरक्षण के प्रति जागरूक बनें।

AYURVET

AGES ALTERNATIVE GREEN ENERGY SOLUTIONS

ARF AYURVET RESEARCH FOUNDATION

किसान भाइयों के लिए खुशखबरी

धान की नर्सरी

गन्ने की नर्सरी

हरा चारा

अब खरीदें और पाएं सब्सिडी

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: 9179568382

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स तकनीक एक, लाभ अनेक

पौधे को उगाने के लिए सामान्यतः बीज को मिट्टी में डाला जाता है, जबकि हाइड्रोपोनिक्स तकनीक में पौधे को बिना मिट्टी के उगाया जाता है। मिट्टी पौधों के लिए पोषक पदार्थों के संवाहक का काम करती है, लेकिन मिट्टी पौधे की वृद्धि के लिए स्वयं जरूरी नहीं होती। यदि पौधों को जरूरी तत्व पानी में घोलकर दें, तो पौधों की जड़ें उन्हें प्रयोग करने में सक्षम होती हैं एवं पौधों की वृद्धि सामान्य रहती है।

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स के लाभ

- इस तकनीक में जमीन एवं पानी की बहुत कम जरूरत पड़ती है।
- इस विधि में वातावरणीय प्रदूषण भी घट जाता है, क्योंकि पोषक तत्वों का उपयोग पूरी तरह होता है।
- पौधों में कीड़े और बीमारियां लगने की संभावना कम-से-कम होती है, क्योंकि इस विधि में पौधों का विकास नियंत्रित वातावरण में होता है।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक आने वाले समय की जरूरत बनने वाली है क्योंकि बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ फसलों का बढ़ता उत्पादन हमारी प्राथमिकता है।
- आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स तकनीक को आयुर्वेट के वैज्ञानिकों द्वारा निरंतर आगे बढ़ाने का कार्य किया जा रहा है और उन्हें इसके अनुकूल परिणाम भी मिल रहे हैं।

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स के उपयोग

- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से धान की नर्सरी तैयार करना।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से साग-सब्जी के पौधों की नर्सरी।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से औषधीय व मसाले वाले पौधों की नर्सरी।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से हरे चारे का उत्पादन।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से व्हीट ग्रास का उत्पादन।

सदस्य बनें

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

एक अच्छी आदत पड़ जाए
जो ज्ञान का दीप जलाएं

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

आयुर्वेट लिमिटेड, 101-103, प्रथम तल, केएम ट्रेड टॉवर, प्लांट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010 (उ.प्र.). दूरभाष: 91-120-7100201

कृपया स्पष्ट लिखें/टाइप करें:

☐ स्वयं के लिए ☐ मित्र को भेंट ☐ संस्थागत

नाम:.....संस्थान.....

पता:☐ कार्यालय ☐ घर.....

.....

पिन.....

दूरभाष:☐ कार्यालय ☐ घर.....

मैं राशि.....नकद/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट/चैक क्रमांक.....(दिल्ली से बाहर के लिए 15 रुपए अतिरिक्त जोड़कर दें) दिनांक..... ''आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली'' के नाम प्रेषित कर रहा हूं। कृपया पत्रिका प्रेषित करें।

मूल्य : 25/- रुपए प्रति अंक
वार्षिक सदस्यता शुल्क : 275/- रुपए

AYURVET
जब भी पशु करे
खाने में आनाकानी
रुचामैक्स
दूर करे परेशानी
महीने में दें
सात दिन
दूध पायें
रात दिन
RUCHAMAX
APPETITE STIMULANT & DIGESTIVE TONIC
रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक
रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक
अधिक जानकारी के लिए
टोल फ्री नं० पर मिस्ड कॉल करें
97803 11444

सर्दी के मौसम में पोल्ट्री का प्रबंध

-डॉ. अमरदीप सिंह

सर्दी के मौसम में हवा के आने जाने का उचित प्रबंध होना चाहिए। पक्षी अपनी सांस एवं मल–मूत्र के द्वारा बहुत सी नमी बाहर छोड़ते हैं, जिससे अमोनिया उत्पन्न होता है और अगर वातावरण में अमोनिया की मात्रा बढ़ जाए, तो उनके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। अगर शेड में हवा के आने जाने का उचित प्रबंध नहीं होगा, तो अमोनिया का निर्माण भी अधिक होगा, जो पक्षियों में श्वास तथा पाचन संबंधी परेशनियों को बढ़ाएगा। इससे उन्हें बचाने के लिए शेड में अंदर ताज़ा हवा के आने जाने का उचित प्रबंध होना चाहिए। इसके लिए रपट खिड़कियों का प्रयोग उचित होता है, जिन्हें दिन में खोल दिया जाना चाहिए और रात में बंद कर देना चाहिए। अशुद्ध वायु को बाहर निकालने हेतु एग्जॉस्ट पंखों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

सर्दियों के मौसम में वातावरण ठंडा हो जाता है, जिसका पोल्ट्री के उत्पादन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। सर्दियों में जब तापमान 15 डिग्री सेल्सियस से कम चला जाता है, तब बहुत सारी परेशनियों का सामना करना पड़ता है। इसलिए बेहतर उत्पादन के लिए पोल्ट्री उत्पादकों को सर्दियों के मौसम में निम्नांकित बातों का ध्यान रखना चाहिए:-

घर का उन्मुखीकरण एवं तापमान प्रबंध

- सर्दी के मौसम मे पोल्ट्री फार्म का निर्माण पक्षियों की सुविधा को ध्यान में रखकर करना चाहिए।
- इमारत के अंदर हवा, धूप एवं रोशनी चारों ओर से आनी चाहिए ताकि बाहरी सतहों का तापमान नियमित रहे।
- सर्दियों में सूरज की रोशनी और धूप कम समय के लिए आती है।
- एक आयताकार शेड अधिक से अधिक सौर ऊर्जा को ग्रहण करता है, इसलिए शेड ऐसा बनाना चाहिए, जिसमें दिन के समय अधिक से अधिक रोशनी और धूप अंदर आ सके।
- पक्षियों को ठंडी हवा से बचाने के लिए शाम से लेकर अगली सुबह तक चटाई बैग या बोरियों को चारों तरफ टांग देना चाहिए।
- प्रति 250 से 500 पक्षियों के लिए एक बुखारी का इस्तेमाल करें। यदि बुखारी उपलब्ध न हो तो प्रति 20 पक्षियों के लिए एक 100 वाट बिजली के बल्ब का प्रयोग करें।
- सर्दियों में तापमान को नियमित रखने के लिए अधिक ऊर्जा की ज़रूरत होती है। जहाँ तक हो सके, बुखारी का प्रयोग केवल रात में करें।
- दिन के समय धूप का प्रयोग कर पोल्ट्री फार्म को गरम रखें और ज़रूरत पड़ने पर बिजली बल्ब का प्रयोग करें।

हवा का आना जाता (वेंटिलेशन)

- सर्दी के मौसम में हवा के आने जाने का उचित प्रबंध होना चाहिए।
- पक्षी अपनी सांस एवं मल-मूत्र के द्वारा बहुत सी नमी बाहर छोड़ते हैं, जिससे अमोनिया उत्पन्न होता है और अगर वातावरण में अमोनिया की मात्रा बढ़ जाए, तो उनके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता

है।

- अगर शेड में हवा के आने जाने का उचित प्रबंध नहीं होगा, तो अमोनिया का निर्माण भी अधिक होगा, जो पक्षियों में श्वास तथा पाचन संबंधी परेशनियों को बढ़ाएगा। इससे उन्हें बचाने के लिए शेड में अंदर ताज़ा हवा के आने जाने का उचित प्रबंध होना चाहिए। इसके लिए रपट खिड़कियों का प्रयोग उचित होता है, जिन्हें दिन में खोल दिया जाना चाहिए और रात में बंदकर देना चाहिए।
- अशुद्ध वायु को बाहर निकालने के लिए एग्जॉस्ट पंखों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

लिट्टर प्रबंध

- चूज़ो को शेड के अंदर रखने से पहले फर्श की ऊपरी सतह को लिट्टर या भूसे के बिस्तर या बिछावन से ढक देना चाहिए। यह पक्षियों को आराम देता है।
- एक गुणवत्ता वाला लिट्टर एक अच्छे विसंवाहक का काम करता है। यह वातावरण के तापमान को संतुलित रखता है और नमी को सोख कर वातावरण को सूखा बनाता है।
- सर्दियों में लिट्टर की मोटाई 3 से 6 इंच तक रखें, ताकि यह पक्षियों के शरीर से निकलने वाली गर्मी को बचाकर रखे तथा नमी सोख ले।
- एक अच्छा लिट्टर पक्षियों को धरती की ठंड से बचाकर रखता है और उनके लिए सुरक्षा कवच का काम करता है। लिट्टर पक्षियों के मल को पतला कर देता है, जिससे पक्षी और मल का संपर्क नहीं हो पाता।
- कोशिश करें की सर्दियों में पक्षियों के अतिरिक्त बिछावन उपलब्ध रहे, क्योंकि सर्दियों में बिछावन देरी से सूखता है और गीला होने की स्थिति में इसे तुरंत बदल देना चाहिए।
- बिछावन के लिए लकड़ी की छीलन, चूरा, पतवार, कटा हुआ गन्ना, पुआल, भूसा और अन्य सूखी, शोषक, कम लागत वाली जैविक सामग्री का उपयोग किया जा सकता है।
- लिट्टर को अत्यधिक सर्दी के मौसम में कभी न बदलें। अगर लिट्टर प्रबंध उचित होगा, तो पक्षियों का तापमान भी उचित रहेगा।

फीड प्रबंध

- पोल्ट्री में फीड का प्रयोग दो उद्देश्यों को पूरा करने के लिए किया जाता है-शरीर के तापमान को संतुलित रखने के लिए ऊर्जा स्रोत के रूप में और सामान्य शारीरिक प्रक्रियाओं, मज़बूत हड्डियों, मांस उत्पादन एवं पंखों के लिए निर्माण सामग्री के रूप में।
- मौसम के बदलाव के साथ साथ फीड में भी सामान्य बदलाव करना चाहिए। निम्न तापमान में अधिक ऊर्जा की ज़रूरत होती है, जोकि अधिक फीड तथा आक्सीजन सेवन से पूरी होती है।
- तापमान अधिक ठंडा होने पर पक्षी अपने शरीर की गर्मी को संतुलित रखने के लिए अधिक फीड का सेवन करते हैं इसलिए तापमान गिरने पर पक्षियों को भरपेट फीड दें।
- फीडर में फीड की उपलब्धता दिन के साथ-साथ रात में भी बनाये रखें।
- जब पक्षी अधिक फीड खाते हैं तो ऊर्जा के साथ-साथ अन्य पोषक तत्व, जिनकी आवश्यकता नहीं होती वह भी अंदर जाते हैं, लेकिन उनका कोई उपयोग नहीं होता।
- कोशिश करें कि सर्दियों के मौसम में अधिक ऊर्जा प्रदान करने वाले पदार्थ जैसे आयल केक (खल), चरबी,

शीरा, आदि को फीड में मिलाकर देना चाहिए, ताकि पक्षियों में शारीरिक तापमान का संतुलन बना रहें।

- गर्मियों की अपेक्षा सर्दियों में फीडरों की संख्या बढ़ा देनी चाहिए और इस बात का आवश्यक ध्यान रखना चाहिए कि पक्षी भरपेट फीड एवं दाने का सेवन करें।

जल प्रबंध

- सर्दियों के मौसम में पक्षी कम मात्रा में पानी का सेवन करते हैं। इसलिए पानी की मात्रा को शरीर में संतुलित रखने के लिए लगातार पानी देते रहना चाहिए। अगर पानी अधिक ठंडा हो तो उसमें कुछ मात्रा में गरम पानी मिला देना चाहिए।
- पीने का पानी साफ और ताज़ा होना चाहिए।
- जिन इलाकों में बर्फ गिरती है और तापमान शून्य से नीचे हो जाता है और पाइपों में पानी जम जाता है, वहाँ पाइपों की जाँच करते रहना चाहिए, क्योंकि इन पाइपों के द्वारा ही दवा-टीका पक्षियों को दिया जाता है।
- पानी द्वारा दवा एवं टीका देने से पूर्व कुछ समय के लिए पानी की सप्लाई बंद कर देनी चाहिए।
- दवा और टीके में पानी की मात्रा कम होनी चाहिए, ताकि पक्षियों को उचित मात्रा में दवा-टीका प्राप्त हो सके।

पोल्ट्री में मुनाफा बढ़ाने के लिए इन 10 बातों का रखें ख़ास ध्यान

- चूजों को दिन के ठंडे घंटों में (सुबह 6 बजे से पहले या शाम को 8 बजे के बाद) फार्म में लायें।
- चूजों को हमेशा स्वच्छ पानी और फीड दें। पानी के बर्तन रोज़ साफ़ करें तथा फीड दोपहर में न देकर सुबह, शाम और रात को दें।
- चूजों को उपयुक्त जगह दें (एक दिन के चूजे को 7 इंच तथा 1 महीने के पक्षी को 1 फुट जगह प्रदान करें)। फार्म का फर्श सूखा रखें। अधिक गीला होने पर बूरे का इस्तेमाल करें।
- अपने फार्म को चूहों, साँपों तथा अन्य प्रकार के जीव जंतुओं से बचाएं, ये पक्षियों को मारने के साथ-साथ बीमारियाँ भी फैलाते हैं।
- अपने या अपने फार्म में कार्यरत कर्मचारियों के अलावा किसी को फार्म में न आने दें। यदि कोई आना भी चाहे तो उसकी साफ़ सफाई का विशेष ध्यान रखें। खुद भी तथा अन्य व्यक्तियों के हाथ तथा पैर साफ़ करा कर ही फार्म में प्रवेश करें।
- वेंटिलेशन का ख़ास ध्यान रखें। गर्मियों में फार्म के परदे उतार दें तथा एग्जॉस्ट पंखें लगा कर फार्म में पैदा हुई गैस को बाहर निकालें। सर्दियों में भी परदे थोड़े झुका दे ताकि साफ़ और शुद्ध हवा का घुमाव बना रहे।
- अगर आपके फार्म में कोई बीमारी नहीं आई है, तो एंटीबायोटिक का प्रयोग न करें। केवल विटामिन टॉनिक और प्रोबायोटिक दें, जिससे कि चूजों की सेहत बनी रहे। प्रोबायोटिक वो दवाई होती है, जिससे चूजों का रोधक क्षमता बढ़ती है और पाचन में सुधार आता है।
- चूजों को समय-समय पर वैक्सीन दें। भारत में गम्बोरो, रानीखेत और मेरेक्स बीमारियों के लिए वैक्सीन देना अति आवश्यक है।
- अगर कोई चूजा बीमार दिखाई दे या अन्य चूजों से अलग रहे तो उसे उसी वक़्त फार्म के स्वस्थ चूजों से अलग कर दें।
- कोई भी समस्या आने पर केवल पंजीकृत पशु चिकित्सक से ही सुझाव लें।

- प्रति 100 पक्षियों के लिए के लिए 25 लीटर पानी का उपयोग करें।

स्वास्थ्य प्रबंध

- सामान्यता अधिक सर्दियों में घरेलू पक्षी समाप्त होने लगते हैं, लेकिन उचित देखभाल की जाए तो वह सुरक्षित रहते हैं और उनमें उत्पादन भी बढ़ाया जा सकता है।
- चूहे और चुहिया सबसे बड़ी मुसीबत होते है। यह जन्तु केवल बीमारियाँ ही नहीं फैलाते साथ-साथ दूषित मल भी छोड़ते हैं, जो पक्षियों में फीड के द्वारा उनके अंदर जाता है। फीड को इससे बचाने के लिए धातु से बने डिब्बे में रखना चाहिए।
- फीड को खुले बैग में रखने से छोटे-छोटे कीट उत्पन्न हो जाते है। इसलिए लकड़ी और प्लास्टिक के बैगों का प्रयोग करना चाहिए, जो थोड़े समय के लिए इन छोटे-छोटे कीटों को फीड से दूर रखते है।
- हालांकि सर्दियों में संक्रमण कम होता है परन्तु कुछ रोग जैसे की रानीखेत बीमारी, कॉलीबैसिलोसिस, गम्बोरो रोग, चूजों में ब्रूडर न्यूमोनिया, सीआरडी, कॉक्सीडीओसिस इत्यादि पाए जाते हैं।
- समय पर वैक्सीनेशन करने से तथा उचित प्रबंधन से इन रोगों से पक्षियों को बचाया जा सकता है।
- पक्षियों को स्वस्थ रखने के लिए समय पर पानी में उचित मात्रा मे विटामिन-इलैक्ट्रोलाइट मिलाकर देना चाहिए।
- भिन्न-भिन्न प्रकार के पक्षियों को उनकी जरूरत के अनुसार ही उचित मात्रा में फीड देनी चाहिए।
- पक्षियों में उत्पन्न होने वाली अनियमिताओं और विसंगतियों पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।
- पक्षियों को करीब से सुनना अनिवार्य है। अगर सासों में भारीपन या घरघराहट हो तो यह बीमारी का संकेत हो सकता है।
- बीमार पक्षियों को अलग रखें तथा ब्रोड स्पेक्ट्रम एंटीबायोटिक्स जैसे कि टैरामायसिन, एनरोफलोक्सेसिन आदि का प्रयोग पशु चिकित्सक की सलाह के बाद करें।
- सब विसंमतियों का वर्णन एक रिकार्ड बुक में करना अनिवार्य है। जितना ही हम अपनी रिकार्ड बुक को सही रखेंगे उतना ही हम आने वाली समस्याओं से दूर रह सकते है।

क्या चरम सर्दी में चूज़ों को फार्म में पाल सकते हैं ?

जी हाँ। प्रबल प्रबंधन से चूज़ों को फ़ार्म में लाकर पाल सकते हैं। तापमान तथा स्वास्थ्य प्रबंधन पर बल दें। चूज़ों के लिए अच्छा ब्रूडर घर तैयार करें। चूज़ों को लाने से पहले ब्रूडर का तापमान बल्ब तथा बुखारी के

माध्यम से 40 डिग्री सेल्सियस पर रखें। एक दिन पहले फीडर और ड्रिंकर भी ब्रूडर में रख दें। चूज़ों के आने पर एक दिन के लिए पानी में ग्लूकोज़ मिलाकर दें तथा उसमें एंटीबायोटिक दवा का उपयोग करें। दवा का उपयोग केवल 3 से 5 दिनों तक करें। ब्रूडर में अख़बार बिछाकर अध टूटे मक्की के दाने फैला दें। दूसरे दिन से प्री-स्टार्टर फीड देना शुरू करें। उपयुक्त तापमान सुनिश्चित कर चूज़ों को ठंड से बचाएँ।

□□

थनैला की समस्या है बहुत भारी, रोकथाम में ही है समझदारी।
समय से जांच और उपचार, करें हम इस पर विचार।।

AYURVET™

मैस्टीलेप के फायदे

- *रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं एवं थनैला से बचाएं*
- *स्वच्छ दूध उत्पादन में सहायक*
- *थन की सूजन एवं दर्द कम कर पशु को आराम दिलाएं*

मैस्टीलेप 50 ग्राम, 125 ग्राम ट्यूब तथा 125 मि.ली. स्प्रे में भी उपलब्ध है।

मैस्टीलेप

थनैला रोग की रोकथाम के लिये हर्बल जैल

अधिक जानकारी के लिए हमारे टोल फ्री नंबर पर संपर्क करें।
1800-123-3734
सोम-शुक्र प्रातः 9 से 6 बजे तक

आयुर्वेट रिसर्च फाउण्डेशन

नवीनतम उपकरणों से सुसज्जित अनुसंधान केंद्र में निम्नलिखित जांच सुविधाएं उपलब्ध-

- ✓ खाद्य, पशु आहार और हरा चारा
- ✓ पानी
- ✓ मिट्टी
- ✓ जैविक खाद
- ✓ औषधीय पौधे
- ✓ एंटीबायोटिक्स
- ✓ माइकोटॉक्सिन

हमारे अनुसंधान केंद्र में आपका स्वागत है। हम शैक्षिक दौरों के लिए आवेदन आमंत्रित करते हैं।
हम मनुष्यों और पशुधन के लिए सुरक्षित और गुणवत्तायुक्त खाद्य उत्पादन में सहयोग करते हैं।

Registered Office : 4th Floor , Sagar Plaza, Distt. Centre, Vikas Marg, Laxmi Nagar, Delhi, INDIA - 110 092.
Phone: 011-22455993 • Email: info@ayurvet.com • Website: www.ayurvet.com

Corporate Office: Unit No. 101-103, 1st Floor, KM Trade Tower, Plot No. H-3, Sector-14, Kaushambi, Ghaziabad -201010 (U.P.)
Tel.: 0120-7100201 • Fax : 0120-7100202

AYURVET RESEARCH FOUNDATION

सफल ब्यांत - अधिक दूध उत्पादन तथा मुनाफे की ओर बढ़ते कदम
3321
बेहतर पशु स्वास्थ्य, अच्छा पाचन और अधिक दुग्ध उत्पादन
स्वस्थ ब्यांत
बढ़िया पाचन प्रणाली
स्वस्थ अयन
एक्सापार
जेर गिराने व गर्भाशय की सफाई के लिए
रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक
रैस्टोबल
रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाये,
तनाव से बचाए और कार्यक्षमता बढ़ाए
AYURVET ™
आयुर्वेट लिमिटेड
कॉरपोरेट कार्यालयः यूनिट नं. 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टावर, प्लाट नं. एच-3, सेक्टर-14, कौशांबी, गाजियाबाद-201010 (उ.प्र)
दूरभाषः +91-120-7100201 फैक्सः +91-120-7100202
ई-मेलः customercare@ayurvet.com वेबः www.ayurvet.com
सीआईएन सं.: U74899DL1992PLC050587
रजिस्ट्रड ऑफिसः चौथी मंजिल, सागर प्लाज़ा, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-110092
पारंपरिक ज्ञान
आधुनिक अनुसंधान